॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

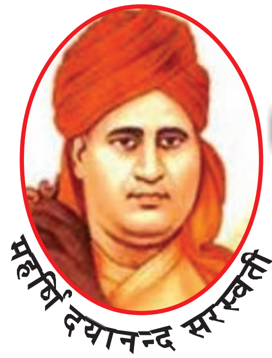

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जुलाई, 2015 वर्ष 18, अंक 7 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2072 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 20

दान एवं दक्षिणा की महिमा

❐ महात्मा चैतन्यमुनि

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के एक सौ सातवें सूक्त का ऋषि 'दिव्यो दक्षिणा वा प्राजापत्या' है और देवता 'दक्षिणा तद्दातारो वा'। इस सूक्त में कुल ग्यारह मन्त्र है। इस लघु लेख में सभी मन्त्र देना संभव नहीं अतः हम दान व दक्षिणा देने वाले को क्या-क्या उपलब्धियाँ होती है इसका ही संक्षिप्त सा विवेचन करेंगे। मन्त्रों में कहा गया है कि 1. **(दक्षिणायाः उरूः पन्थाः)** दान देने वालों का उच्च मार्ग है, कल्याणप्रद मार्ग है, 2. उन्हें **(महि माघोनम् अविः अभूत्)** महनीय ऐश्वर्य प्रकट होता है, 3. **(तमसः निरमोचि)** अज्ञानान्धकार से मुक्त हो जाते है, उनकी वृत्ति तामसिक नहीं रहती, 4. **(पितृभिः दत्तम् महि ज्योतिः आगात्)** माता, पिता, आचार्य आदि से दी हुई महनीय ज्ञान की ज्योति प्राप्त होती है (ऋ 10.107.1), 5. **(उच्चादिवि दक्षिणावन्तो)** द्योलोक में उच्च स्थान को प्राप्त होते हैं, 6. **(अश्वदाः ते सूर्येण सह)** घोड़ों के दान से सूर्यलोक में, 7. **(हिरण्यदाः अमृतत्वम्)** स्वर्ण दान वाले अमृतत्व का सेवन करते हैं अर्थात् असमय में मृत्यु नहीं होती वा अमरत्व को प्राप्त होते हैं, 8. **(वासोदाः)** उत्तम वस्त्रों का दान देने वाले दीर्घजीवी होते है (ऋ. 10.107.2.), 9. **(दक्षिणा दैवी पूर्ति)** दैवी शक्तियों से दक्षिणा पूरित करती है (ऋ. 10.107.3), दान दात्ता को 10. **(अर्कम् स्वर्विदम्)** उपासना की साधनभूत स्वर्ग की प्राप्ति होती है, वह दान उसे 11. **(दक्षिणायाम् सप्तमातरम्)** सप्तगुणित होकर प्राप्त हो जाता है (ऋ 10.107.4), 12. **(दक्षिणावान् प्रथमः हूतः)** दान दाता सभा आदि में (प्रभु दरवार में भी) प्रथम स्थान प्राप्त करता है, 13. **(दक्षिणावान् ग्रामणीः)** दानदाता ग्राम का नेता बनकर आगे-आगे चलता है, 14. **(जनानाम् नृपतिं मन्ये)** लोग उसे अपना राजा मानते हैं क्योंकि वह मनुष्यों का पालन करने वाला होता है (ऋ. 10.107.5), 15. **(दक्षिणया रराध)** वह सिद्धि को प्राप्त करता है, उसके सभी अशुभ गुण दूर हो जाते है तथा शुभों को प्राप्त होता है, 16. **(ऋषिं आहुः) (ऋष गतौ)** लोग उसे सब कार्यो को करने वाला ऋषि कहते है, यज्ञ में सब ऋत्विजों के कार्य इसकी दानवृत्ति से ही परिपूर्ण होते है इसलिए उसे ही 17. **(ब्रम्हाणाम, यज्ञन्यम्, सामगाम्, उक्थशासम्)** ब्रम्हा, अध्वर्यु, उद्गाता और होता कहते हैं, 18. **(सः शुकस्य तिस्त्रः तन्वः वेद)** वह उस ज्योतिमर्य प्रभु के तीनों शरीरों को जानता है-प्रभु कृपा से उसके शरीररूप पृथिवीलोक में तेजस्विता के रूप में अग्नितत्व होता है, हृदयान्तरिक्ष में प्रसन्नता के रूप में चन्द्र का निवास होता है, और मस्तिष्करूप द्युलोक में ज्ञान-सूर्य का उदय होता है (ऋ. 10.107.06)। इसी क्रम में आगे कहा गया-

दक्षिणाश्वं दक्षिणा गां ददाति दक्षिणा चन्द्रमुत यद्धिरण्यम्। दक्षिणान्नं वनुते यो न आत्मा दक्षिणा वर्म कृणुते विजानन्।। (ऋ 10.107.7) दान (दक्षिणा) की वृत्ति हमारे- 19. **(अश्वं ददाति)** घोड़ों को देती है, 20. **(गां ददाति)** गौवों को देती हैं, 21. **(चन्द्रम्)** चान्दी को देती है, 22. **(हिरण्याम्)** स्वर्ण को वा हित रमणीय को देता है, 23. **(अन्नं वनुते)** अन्नों को दिलाती है, 24. **(वर्म कृणुते)** परमात्मा की कृपा से यह दान-वृत्ति हमारे लिए किसी कवच के समान काम करती है। 25. **(भोजाः न मम्रुः)** दूसरों का पालन करने वाले यह दानदाता असमय में नहीं मरते, विषय-भोगों व दुरितों में नहीं फंसते तथा इनका यशः शरीर सदा रहता है, 26. **(न्यर्थम् न ईयुः)** निकृष्ट गति को प्राप्त नहीं होते है, 27. **(न रिष्यन्ति)** हिंसित नहीं होते (न किसी प्राणी सेन दुरितों सेन रोगों से, 28 **(विश्वभुवनम् च स्वः)** उसे सब लोक तथा स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है (उसके इहलो व परलोक दोनों संवर जाते हैं) (ऋ 10.107.8), 29. **(अग्र भोजाः सुरक्षिं योनिम् जिग्युः)** ये दान देकर दूसरों का पालन करने वाले सबसे आगे सुगन्धिवाले घर को जीतते हैं (ऐसे घर को प्राप्त होते हैं जिसमें सब लोग उत्तम स्वास्थ्य वाले, उत्तम वृत्ति वाले व बुद्धिमान् होते है), 30. **(भोजाः वध्वं जिग्युः या सुवासाः)** ये भोज लोग ऐसी वधु को प्राप्त होते है जो घर को सुवासित (सुव्यवस्थित, उत्तम) बनाती है, 31. **(सुरायाः अन्तः पेयम् जिग्युः)** ऐश्वर्यसम्पन्न घर के सुन्दर पदार्थो का सेवन जीतते हैं **(शेष पृष्ठ 19 पर)**

डॉ. पूनम सूरी
सभा के प्रधान पुनः निर्वाचित

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. पूनम सूरी, प्रादेशिक सभा के पुनः प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज के लिए मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित–पूनम सूरी

प्रधान डॉ. पूनम सूरी के साथ उपप्रधान श्री प्रमोद महाजन, महामन्त्री श्री एस.के. शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री बलदेव जिंदल, सहमन्त्री श्री सतपाल आर्य एवम् पुस्तकालय अध्यक्ष श्री जे.पी. शूर

भारतवर्ष से आए प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पुनः निर्विरोध निर्वाचित प्रधान डॉ. श्री पूनम सूरी ने कहा कि आर्य समाज और डी.ए.वी. के माध्यम से देश की युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के कार्यक्रम को बहुआयामी बनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि डी.ए.वी. विद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों के लिए धर्मशिक्षा की पुस्तकें नये सिरे से तैयार की जा रही हैं जिन्हें विद्यार्थियों के मानसिक स्तर और उनकी रूचि के अनुसार रूप दिया जा रहा है। अध्यापकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए मान्य प्रधानजी ने आह्वान किया कि सभी अध्यापक धर्मशिक्षक बने अर्थात् सत्य और धर्म पर चलने वाले और सत्य तथा धर्म का प्रचार करने वाले बनें। उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया में आचार्य का ब्रह्मनिष्ठ होना और क्रोध–रहित होना एक बहुत बड़ी विशेषता है जिसकी ओर प्रयत्न करते रहना चाहिए। मान्य सूरीजी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन में बोल रहे थे।

इस अधिवेशन में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की एक वेबसाइट का उद्घाटन हुआ जिससे अब सभा की गतिविधियां संपूर्ण विश्व में वेबसाइट पर देखी जा सकेगी। उपस्थित सभासदों ने इस कदम की हार्दिक सराहना की।

मान्य प्रधानजी ने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को लेकर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि जिन आर्य समाजों की गतिविधियां मंद पड़ गई हैं उन्हें सुचारू रूप से चलाने के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा। श्री पूनम सूरी ने कहा कि सभा ने यह निश्चय किया है कि प्रतिवर्ष किसी एक प्राचार्य को जिसने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में उच्चतम कोटि का कार्य किया होगा उसे 'महात्मा हंसराज दिवस' पर ''आर्य सेवक सम्मान'' से अलंकृत किया जाएगा।

मान्य सूरीजी को तीर्थकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद की ओर से शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं पत्रकारिता और वाणिज्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए पी.एच.डी. की मानद–उपाधि से अलंकृत किया गया है। इस उपलब्धि के लिए उपस्थित सभासदों ने समवेत–स्वर से मान्य प्रधानजी को सोल्लास बधाई दी।

अधिवेशन में सभामन्त्री ने 2014–15 का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया और साथ ही 2015–16 का वार्षिक बजट प्रस्तुत किया। जिसकी सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई। अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधियों और अधिकारियों से सभा के कार्यो को गतिशील बनाने के लिए सुझाव मांगे गए जिसमें श्री अजय सहगल 'दिल्ली', श्री अशोक कुमार अदलखा 'दिल्ली', श्री लखीराम आर्य 'दादूपुर', श्री मामचंद रिवारिया 'दिल्ली', श्री अखिलेश भारती 'पुलबंगश', श्री इन्द्रपाल आर्य लक्ष्मणसर', श्री के.एल. खुराना 'पलवल', श्रीमती शशिकिरण गुप्ता 'शिमला', श्री अनिल गुप्ता 'अम्बाला शहर', श्री हीरालाल चावला 'पश्चिम विहार', श्री एच. आर. गंधार 'चण्डीगढ़', श्री अरविन्द घई 'जालंधर' आदि ने सभा को अधिक सक्रिय और गतिशील बनाने के सुझाव दिये। इन सुझावों में 'सत्यार्थ प्रकाश' को बिना किसी मूल्य अथवा नाम–मात्र मूल्य पर अधिक से अधिक संख्या में वितरित करना और अपने लिए चैनल और सेटेलाइट की व्यवस्था करना आदि सकारात्मक सुझाव दिये गये। डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा रचित 'महात्मा हंसराज चित्रकथा' का विमोचन हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक चुनाव के संदर्भ में वर्ष 2015–16 के प्रधान–पद के लिए डॉ. श्री पूनम सूरी जी निर्विरोध निर्वाचित हुए। उप–प्रधान पद पर श्री प्रबोध महाजनजी, मन्त्री पद पर श्री एस.के. शर्मा, सहमन्त्री पद पर श्री सत्यपाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलदेव जिन्दल और पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जे.पी. शूर चुने गये।

सुविधायें ही नहीं संस्कार भी आवश्यक

वेदों में माँ का स्थान प्रथम शिक्षक के रूप में बताया गया है ''आचार्य देवो भव'' से पूर्व ''मातृ देवो भव'' की घोषणा की गई है।

अगर हम अपने जीवन में देखें अथवा इतिहास को देखें तो हम पायेंगे कि आचार्य कुल में जाने से पूर्व, गर्भस्थ शिशु को माँ ही आचार्य अथवा शिक्षक का कार्य करती है। बच्चा जन्म लेते ही रोना माँ के गर्भ से जन्म पूर्व ही सीख लेता है और बिना सिखाये पहला शब्द माँ ही पुकारता है। अगर हम इतिहास की ओर देखें तो महाभारत में अभिमन्यु अपनी माँ के गर्भ से ही युद्ध नीति के अनुसार चक्रव्यूह में घुसना सीख गया था। इसका तात्पर्य यह हुआ कि माँ के दिल से बच्चे की सांसें जुड़ी होती हैं और बच्चा गर्भ से ही संस्कार लेना प्रारम्भ कर देता है। शिवाजी की माँ जीजीबाई ने अपने पति से पूछा कि आपको कैसा बालक चाहिए तो उन्होंने कहा कि मुझे वीर प्रतापी कई गुणों और कलाओं से पूर्ण बालक चाहिए। जीजाबाई ने गर्भ धारण करने के उपरान्त पूर्ण रूपेण वैदिक संस्कार के अनुसार सभी संस्कार पूर्ण किये और वीर शास्त्रों का अध्ययन करती रही। इसी कारण उसने भारत माँ के महान सपूत शिवाजी को जन्म दिया। बच्चों को संस्कारित करना माँ का ही कर्तव्य बनता है।

बच्चों को सुविधायें देना आवश्यक है लेकिन केवल सुविधायें देना हानिकारक सिद्ध हो रहा है। आजकल अधि कांश परिवारों में एक भयंकर चूक हो रही है कि माता पिता अपने बच्चों को अधिक से अधिक सुविधायें तो दे रहे हैं परन्तु संस्कारों के नाम पर कुछ खास नहीं दे पा रहे हैं। यही कारण है कि बच्चे एवं युवक नहीं समझ पा रहे हैं कि अपने माता-पिता, बहन-भाई, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य है। बच्चे माता-पिता, समाज और देश से केवल सुविधायें चाहते हैं। इन सबके प्रति बच्चों का क्या कर्तव्य है, यह नई पीढ़ी के सोच के दायरे से बाहर होता जा रहा है।

अगर हम अपने अन्दर झांक कर देखें तो क्या हमने अपने बच्चों को आर्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, महाराणा प्रताप, शिवाजी और झांसी की रानी के विषय में बताया है कि इन सभी महापुरुषों एवं वीरों ने अपने जीवन में किस प्रकार समाज और राष्ट्र की सेवा की, या कभी भारतीय संस्कृति एवं लोक व्यवहार के महत्व को बताया? मन की गहराईयों से कृपया इस विषय पर विचार कर स्वयं अपना आकलन करें। आप कभी विचार करें कि आपका बालक अथवा बालिका, आपके पास, आपके परिवार की ही नहीं राष्ट्र की भी धरोहर है। आपने कभी यह अनुभव किया कि राष्ट्र के भावी भविष्य के निर्माता आपकी गोद में पल रहे हैं। स्मरण रहे कि आप ही बच्चों की प्रथम आचार्या हैं। यदि माँ चाहे तो आप देश को शिवाजी, दयानन्द एवं श्रद्धानन्द जैसे समाज सेवी दे सकती हैं। आज युवाओं में गुण्डागर्दी, बलात्कार, चोरी, डकैती, नशे की आदत, पाश्चात्य सभ्यता का बढ़ता स्वरूप, यह सभी शब्द उपज हैं संस्कार न देने के कारण ही।

अगर हम यह मानते हैं कि संस्कार बच्चे को गर्भ से ही प्राप्त होने लग जाते हैं तो आज की गर्भवती माँ दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों जिनमें पारिवारिक लड़ाई झगड़े, क्लेश विवाद, खून खराबा, साजिशें करना आदि क्यों देख रहे हैं। स्मरण रहे कि आपके होने वाले शिशु पर इस सबका प्रभाव पड़ रहा है। बच्चों को संस्कारित करने के लिये आपको स्वयं भी संस्कारित होना होगा एवं संयम में रहते हुए त्याग भी करना होगा। माँ त्याग का एक दूसरा रूप होती है। आपको इस कलयुग में ऐसे कई पिता मिल जायेंगे कि जिसका बच्चा भूखा हो और वह शराब पी रहा हो लेकिन ऐसी माँ नहीं मिलेगी जिसका बच्चा भूखा हो और वह स्वयं भोजन करे। वह भूखी रहकर त्याग करके बच्चों को भोजन अवश्य करायेंगी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि माँ जैसा समर्पण कोई नहीं कर सकता। इसलिये बच्चों को सुविधाओं का इतना आदी न बनायें कि वह आपके द्वारा दिये जाने वाले संस्कारों को भी न समझ पाये। पश्चिम की तर्ज पर आज भारत में भी स्थान-स्थान पर वृद्धाश्रम स्थापित हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण ही बच्चों का संस्कारित न होना है। इसलिये समय रहते इस महत्वपूर्ण दृष्टिकोण को समझने और बच्चों को धार्मिकता एवं राष्ट्रीयता घुट्टी के रूप में देने हेतु आर्य वीर दल और आर्यसमाज में भेजें। यही शाश्वत संस्थायें हैं जो राष्ट्र और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज ने राष्ट्र को ही नहीं अपितु विश्व को भी कई महान् विभूतियां दी हैं। लाला लाजपत राय, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, महात्मा हंसराज, महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी श्रद्धानन्द, वर्तमान में स्वामी रामदेव, पहला भारतीय अन्तरिक्ष यात्री राकेश शर्मा, विश्व के सबसे अधिक मोटर साईकिल एवं साईकिल बनाने वाले उद्यमी महात्मा सत्यानन्द मुंजाल एवं बृजमोहन मुंजाल, विश्वप्रसिद्ध मसाला उद्योगपति महाशय धर्मपाल जी, यह सभी आर्य संस्कारों की ही उपज हैं। हमें गर्व है कि इन सभी महानुभावों ने सन्देश दिया कि आओ वैदिक मान्यताओं से जुड़ो और बच्चों को इससे जोड़ो। किसी कवि ने शब्दों को कुछ इस प्रकार से संजोया है :

''भरोसा कर तू 'आर्य समाज' पर, तुझे धोखा नहीं होगा।''

'अजय' टंकारावाला

पहले क्या था

वैदिक अध्ययन, वैदिक भोजन,
और उचित विश्राम।
ईश्वर प्राणिधान से युक्त जीवन,
ईमानदारी से काम॥
वैदिक भेषज, वैदिक भूषा,
वैदिक ज्ञान-विज्ञान।
वेदानुसार आचरण करना,
अपनी श्रेष्ठ पहचान॥

अब क्या है

वेदाध्ययन गया, सुभोजन गया,
नहीं सही विश्राम।
धन और नाम मुख्य हुआ,
हो रहा काम ही काम॥
ईश्वरप्राणिधान लुप्त हो रहा,
धर्म का मिटता निशान।
अधर्म, असत्य से आचरण करके,
बन रहे धनवान्॥

क्या होना चाहिए

वैदिक शिक्षा सात्त्विक भोजन,
और समुचित विश्राम।
ईश्वर प्रणिधान से युक्त रहो,
गौण हो धन और नाम॥
पवित्र कमाई से धनार्जन होवे,
राष्ट्र सेवा हो शान।
सच्चे ईश्वर को जानना-जनाना
अपना हो अभियान॥

-ब्र. प्रशांत आर्य (प्रशान्त कवितावली)
वर्तमान में स्वामी आत्मानन्द जी, गांधीधाम गुजरात

आज अभी इसी समय

❐ ओमप्रकाश बजाज

''मौत का एक दिन मुऐययन है नींद क्यों रात भर नहीं आती।'' उर्दू का एक पुराना बहुचर्चित शे-र है। सही है कि मौत तो हर एक को आनी है और अपने निश्चित निर्धारित समय पर आनी है। फिर उससे डर कैसा और उसकी चिन्ता क्यों?

मृत्यु का समय, घड़ी, पल निश्चित होते हुए भी किसी को उस निर्धारित क्षण का आभास तो नहीं है। हम सौ वर्ष तक जिएं अथवा अगली सांस लेने का अवसर भी न मिले, यह कोई भी नहीं जानता। कोई नहीं कह सकता। न बड़े से बड़ा ज्ञानी व वैज्ञानिक। यह जानकारी ऊपर वाले ने अपने ही हाथ में रखी है।

''सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं।'' बहुत पहले किसी सयाने ने कहा था। हम लम्बे लम्बे प्रोग्राम बनाते हैं। वर्षों आगे की सोचते हैं। पोते ही नहीं पड़पोते की बहू का मुंह देखने और उनके बच्चों को दुलारने गोद खिलाने की तमन्ना रखते साध पालते हैं यह जानते हुए भी कि जीवन क्षणभंगुर है। यक्षप्रश्न हर युग में प्रासंगिक रहा है। आज भी है कि अड़ोसी-पड़ोसी, भाई-बन्धु, मित्र-संबंधियों को अपने ही कन्धों पर शमशान कब्रिस्तान पहुंचाकर भी हम स्वयं को मृत्यु से परे माने रहते हैं। बुजुर्ग कह गए हैं कि केवल आज के लिए जियो। भूत तो बीत गया। अतीत हो गया। भविष्य अनिश्चित है। उसका क्या भरोसा। आज वर्तमान है। हमारी मुट्ठी में है। जो कुछ करना है आज, अभी, इसी समय कर लें।

धर्मग्रन्थों में भी आया है कि मृत्यु को सदा सामने रखो। जीवन की गहमागहमी में हम मृत्यु को भुला ही बैठते हैं। जबकि मृत्यु ही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। वास्तविकता है। मृत्यु को ध्यान में रखने अथवा आज भर के लिए जीने का आशय यह कदापि नहीं कि हम भयाक्रान्त रहें। बिन आई मौत मरते रहें। तात्पर्य यह है कि यह मानकर कि न जाने अगली सांस आए या न आए, हम वह सद्कार्य जो हम करना चाहते हैं, कर डालें। उन्हें कल के लिए न टालें। कल भला किसने देखा है।

मनुष्य स्वभाव है कि वह करना तो बहुत कुछ चाहता है। करने की सोचता भी है। मंसूबे भी बनाता है किन्तु वर्तमान की व्यस्तताओं से घिरा उसे आगे के लिए टाल देता है। एक बार टल गया कार्य फिर टलता ही चला जाता है। यह भी सर्वमान्य तथ्य है कि रोजमर्रा के काम तो जैसे तैसे होते चले जाते हैं किन्तु किसी भी सद्कार्य विशेष के विचार की स्टेज से कार्यान्वयन की स्टेज तक पहुंचने में समय लग जाता है। कई अड़चनें आती चली जाती हैं। वह कहावत है ना-''हजारों मंजिलें हायल हैं लब तक जाम आने में''। होना तो यह चाहिए कि किसी भी अच्छे कार्य करने की जैसे ही मन में इच्छा उत्पन्न हुई उसे तुरन्त कर डाला। कार्यरूप दे दिया। किन्तु वास्तविक जीवन में ऐसा कम ही होता है। यहां भी नकली सिक्के के प्रचलन वाला अर्थशास्त्र का सिद्धान्त कार्यरत होता है। बेकार के कार्य तो निबटते चले जाते हैं मगर महत्वपूर्ण कार्य टलते जाते हैं। जैसे कार्यालयीन कामों के सन्दर्भ में आमतौर पर देखा गया है कि रुटीन का कार्य तो होता चला जाता है मगर रूटीन से जरा सा भी हट कर कोई कार्य हुआ तो उसे उठा कर एक ओर रख दिया जाता है कि इसे बाद में देखेंगे। जब जब उसे उठाते हैं पुन: यही सोच कर धर देते हैं कि जितना समय इसे करने में लगेगा उतनी देर में तो रूटीन वाले चार-छ: काम निबट आएंगे। अस्तु वह काम धरा का धरा ही रह जाता है। मजे की बात यह है कि कोई कार्य जितना पुराना होता जाता है उतना ही अधिकाधिक कठिन प्रतीत होने लगता है। इसीलिए कार्यालयीन कामकाज के अनुभवी लोग हमेशा यही सलाह देते हैं कि जो कार्य कठिन प्रतीत हो, रूटीन से हटकर हो उसे पहले निबटाओ। तुरन्त निबटाओ, यही नियम जीवन की अन्य गतिविधियों में भी उतनी ही प्रासंगिकता से लागू होता है। अत: आवश्यक है कि जब भी हमारे मन में कोई पुण्य का कार्य, भलाई, समाजसेवा, सहायता, संवेदना, दान, किसी के अच्छे कार्य की प्रशंसा, प्रोत्साहित करने, पुरस्कृत करने, किसी से अपने व्यवहार कृत्य कटुवचन कटाक्ष के लिए खेद प्रकट करने, क्षमा मांगने का विचार उत्पन्न हो उसे कल तो क्या अल्प समय के लिए भी न टालें। तुरन्त कर डालें। ''शुभस्य शीघ्रं'' शुभ कार्य में देरी क्यों।

सेवानिवृत लोग बताते हैं कि अवकाश प्राप्त कर लेने के बाद अब उन्हें यह तीव्र अहसास होता है कि अपने कार्यकाल में यह किया होता। वह किया होता। ऐसा नहीं वैसा किया होता। व्यस्तता, काम के बोझ, तनाव, समय की कमी के बावजूद चेहरे पर मुस्कान, व्यवहार में दृढ़ता, मन में हर एक की यथासम्भव सहायता करने की भावना रखी होती। कुछ ऐसा किया होता कि पदत्याग के बाद भी लोग याद करते। समय निकल जाने पर बाद में सोचना तो व्यर्थ है। बेमानी है। अत: आवश्यक है कि समय रहते, आज, अभी, इसी समय जो भी अच्छा कार्य हम कर सकते हैं कर लें।

इन्द्राणी अपार्टमैंटस, 2191-एफ, मदन महल, जबलपुर (म.प.)

देने हारा और है, जो देता दिन-रैन!

रहीम एक समृद्ध-धनी नवाब थे। उनका नियम था कि वह प्रतिदिन सुबह याचकों, फकीरों को दान दिया करते थे। उनके दान देने का नियम या उसूल यह था कि वह अपने सामने रुपयों, पैसों की बड़ी ढेरी लगा लेते थे और आंखें नीची कर उस रुपयो-पैसों की ढेरी से एक-एक मुट्ठी भर कर याचकों को देते जाते थे। एक दिन उनके युग के बड़े कवि और नवाब के मित्र गंग कवि भी वहां उपस्थित थे। कविवर गंग ने देखा एक याचक दो-तीन बार भीख ले चुका है, परन्तु नवाब रहीम फिर भी उसे दे रहे हैं। यह दृश्य देखकर कविवर गंग बोल उठे-

सीखे कहां नवाबजू देनी ऐसी देन?
ज्यों-ज्यों कर ऊंचे चढ़ें त्यों-त्यों नीचे नैन?

कविवर गंग की जिज्ञासा-कुतूहल था हे बड़े नवाब आपको यह देन कहां से मिली, ज्यों-ज्यों आपके हाथ दे रहे हैं, वे तो ऊंचे उठ रहे हैं और आपके नयन-आंखें नीचे झुकी जा रही हैं?

तब बड़ी विनम्रता से नवाब रहीम ने जवाब दिया-

देने हारा और है जो देवता दिन-रैन।
लोग भरम हम पै करें ताते नीचे नैन॥

शायर रहीम ने शायराना अन्दाज में जवाब देते हुए कहा, ''मैं यह कैसे भूलूं कि असल में दाता तो कोई और सबको देने वाला है। जो दिन-रात देता रहता है, लोग भ्रमवश मुझे दाता समझते हैं, इसी तथ्य को जानकर मेरे नैन-आंखें सदा नीची रहती हैं।''

स्व. श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेदोक्त आतंकवाद उन्मूलन के उपाय (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)

❒ श्री गुलशन शर्मा

लोकतान्त्रिक शासन आधुनिककाल में शासन का सर्वाधिक लोकप्रिय रूप माना जाता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। लोकतान्त्रिक राष्ट्रों में इसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। भारत की आजादी को 67 वर्ष बीत गए हैं, लेकिन इसकी स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले असंख्य स्वाधीनता सेनानियों ने स्वतन्त्र भारत का जो भव्य स्वरूप अपनी आँखों में संजोया था, वह सपना अभी पूरा नहीं हुआ है। आज हमारे देश के समक्ष अनेक चुनौतियां विद्यमान हैं, इनमें आतंकवाद, जनसंख्या-वृद्धि, भ्रष्टाचार, गरीबी, सामाजिक अन्याय, साम्प्रदायिकता, बेरोजगारी, नक्सली संगठनों द्वारा की जाने वाली हिंसक घटनाएं, पड़ोसी देश के साथ सीमा संबन्धी विवाद आदि मुख्य हैं।

इन सभी समस्याओं में से यदि एक पर भी विचार किया जाए तो वह भी कम नहीं, वह है आतंकवाद। आतंकवाद केवल भारत की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व की प्रमुख समस्या है। आपातकालीन मेघ के समान आतंकवाद कब कहां अपनी विनाश-लीला से विश्व में अशान्ति का वातावरण बना दे, यह कोई नहीं जानता है। आतंकवाद अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हिंसक एवं गैरकानूनी कृत्यों का आश्रय लेता है, जैसे हिंसक दंगे, बमविस्फोट, विमानों का अपहरण, राजनेताओं और बच्चों का अपहरण, अंतरराष्ट्रीय सीमा पर घुसपैठ इत्यादि।

आतंकवाद को अंग्रेजी में ''टैररिज्म'' कहते हैं, जो लैटिनभाषा के ''टैरर'' शब्द से उत्पन्न हुआ है। कन्वेंशन ऑन प्रविंशेन एण्ड पनिशमेंट 1937 के अनुसार ''आतंकवाद'' का अभिप्राय उन कृत्यों से है जो किसी राज्य के विरूद्ध उन्मुख हों और जिनका उद्देश्य कुछ खास लोगों या सामान्य-जनमानस के मन में भय या आतंक पैदा करना हो''।

आतंकवाद के विस्तार के अनेक कारण हैं, जैसे क्षेत्रवाद, भाषावाद, आर्थिक विषमता, नैतिकमूल्यों एवं आचार के प्रमुख तत्त्वों का ह्रास, समानता का अभाव, दुर्बल न्याय-प्रणाली इत्यादि। उपर्युक्त कारणों में नैतिकमूल्यों एवं आचार के प्रमुख तत्त्व यथा सत्य, अहिंसा, मानवप्रेम, विश्वबन्धुत्व, एकता व समानता, शान्ति की कामना एवं लोककल्याण की भावना का न होना ही आतंकवाद की वृद्धि का प्रमुख कारण है। वस्तुतः सत्य, अहिंसा और मानव प्रेम इत्यादि की भावना ही मानव-समाज एवं मानवता की आधारशिला है। इसलिए यदि हम नैतिकमूल्यों के ह्रास को रोककर, भारतीय जनमानस में वेदोक्त आचार एवं नैतिकता के प्रमुख तत्वों की प्राणप्रतिष्ठा कर दें तो आतंकवाद को जड़ से खत्म किया जा सकता है। वैदिक संहिताओं में जहां अध्यात्म, समाजशास्त्र, विज्ञान आदि से संबन्धित अनेक विषयों का वर्णन मिलता है, वहीं आचार एवं नैतिकता के प्रमुख तत्त्वों का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। जिनका विवेचन इस प्रकार है:-

सत्य- सत्य को मानव-जीवन का सर्वश्रेष्ठ आचार सिद्धान्त माना गया है। वेदों में सत्य को महत्त्व देते हुए कहा गया कि सत्य के द्वारा ही भूमि स्तम्भित मानी गई है। एक स्थान पर तो धरती एवं आकाश को भी सत्य बोलने वाला बताया गया है। वेदों में सत्य को विश्व का मौलिक तत्त्व मानकर सत्य वचन से रक्षा की कामना करते हुए कहा गया है कि जिस पर द्युलोक, दिन-रात तथा सारा जगत् आश्रित है, जिसकी महिमा से प्रतिदिन सूर्योदय होता है, और जल प्रवाहित होता है, ऐसा सत्य वचन हमारी रक्षा करें तथा सत्य के आचरण से ही मानव स्वर्ग में प्रतिष्ठित होता है। इस प्रकार वेदों के अध्ययन से हमें ज्ञात होता है कि सत्य ही मानव के नैतिक आचरण का आधारभूत सिद्धान्त है। इसलिए यदि भारतीय समाज में सत्य के महत्व को उजागर किया जाए तथा भारत का प्रत्येक नागरिक सत्य का आचरण करे तो आतंकवाद को किसी भी प्रकार का आश्रय नहीं मिलेगा तथा आतंकवाद का विस्तार थम जाएगा।

अहिंसा- हिंसा का अर्थ है किसी मनुष्य, जीव, पक्षी इत्यादि को मन, वचन और कर्म से कष्ट न पहुंचाना। यही हिंसा आतंकवाद वृद्धि का सबसे बड़ा कारण है। वेदों में **''मा हिंसी''** कहकर हिंसा का निषेध तथा अहिंसा की स्थापना की गई है। वैदिक मन्त्रों में गौ के लिए **''अघ्न्या''** तथा यज्ञ के लिए **''अध्वर''** शब्द का प्रयोग हुआ है, वह अहिंसा की भावना का ही द्योतक है। इस प्रकार वेदों में अहिंसा के सिद्धान्त की दृढ़ स्थापना की गई है। आतंकवादियों का सम्पूर्ण कार्य हिंसा पर आधारित होता है। यदि आतंकवादी के मन में वेदोक्त अहिंसा की भावना व्याप्त हो जाए तो वे कभी भी हिंसक कृत्यों को नहीं करेगा। जिस से बहुत हद तक आतंकवाद खत्म हो जाएगा।

अभय- सभी प्रकार के भयों से रहित हो जाने को अभय कहते हैं। अभय एक प्रकार की मानसिक स्थिति है जिससे मनुष्य बिना किसी भय के लोक-कल्याण के कार्यो को करने के लिए प्रवृत्त हो जाता है। वेदों के मन्त्रों में भी अभय प्राप्ति के लिए बहुत-सी प्रार्थनाएं की गई हैं। जैसे मित्रों से अभय की प्राप्ति हो, शत्रुओं से भी कोई भय न हो। ज्ञात और अज्ञात दोनों ही प्रकार के शत्रु हमारे भय का कारण न बने। दिन-रात और सब दिशाएँ मुझे अभय प्रदान करती हुई मित्र के समान हित करने वाली हों। इसी प्रकार एक अन्य मन्त्र में भी अन्तरिक्ष, आकाश, पृथिवी और दिशाओं से अभय प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है।

अभय की भावना से युक्त मनुष्य ही आतंकवाद का विरोध कर सकता है। इसलिए अगर विश्व के प्रत्येक नागरिक के हृदय में अभय की भावना जागृत हो जाए, तो प्रत्येक नागरिक आतंकवाद की गतिविधियों का विरोध करेगा।

विश्वबन्धुत्व की भावना-सम्पूर्ण विश्व के नागरिकों को अपना भाई, बन्धु एवं मित्र समझने की विचारधारा को विश्वबन्धुत्व कहते हैं। विश्वबन्धुत्व की इस भव्य भावना का मूल भी वेद ही है। वैदिक ऋषियों ने इस विशाल पृथिवी को ही बन्धु माना है। यजुर्वेद में तो विश्व के समस्त प्राणियों को ही मित्रता की दृष्टि से देखने का संकल्प किया गया है। वेदों में मित्र को छोड़ने वाले मनुष्य की निन्दा करते हुए कहा गया कि जो व्यक्ति मित्र को छोड़ देता है, उसकी वाणी से कोई फल नहीं होता है। वह जो कुछ सुनता है, व्यर्थ ही सुनता है, और वह सत्कर्म का मार्ग नहीं जान सकता है। इसी प्रकार अथर्ववेद में भी सारी दिशाओं को अपना मित्र बनाने की भावना का अवलोकन होता हे। आतंकवाद को खत्म करने के लिए विश्वबन्धुत्व की भावना का होना भी अत्यावश्यक है।

लोक-कल्याण- यह जीवन का एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य तत्त्व है। किसी की रक्षा करने या किसी पर परोपकार करने को ही वस्तुतः लोककल्याण कहते हैं। हमारी वेदवाणी भी लोक-कल्याण के लिए ही आविर्भूत हुई है। ऋग्वेद में मानव एवं पशु इत्यादि सब प्राणियों

के कल्याण की कामना की गई है। इसी प्रकार एक अन्य मन्त्र में ऐसी बुद्धि एवं संपदा की याचना की गई है, जोकि विश्वकल्याण एवं सार्वजनिक हित का सम्पादन करने वाली हो।'' यजुर्वेद के शिवसंकल्पसूक्त में मन के कल्याणकारी होने की कामना व्यक्त की गई है। वैदिक ऋषियों ने कल्याण के मार्ग का अनुसरण करने की भी प्रार्थना की है।

विश्व के प्रत्येक मानव में यदि मानवमात्र व समस्त समाज के प्रति कल्याण की भावना निहित हो जाए तो हिंसात्मक कार्यवाहियाँ करने से पहले आतंकवादी भी दूसरे का कल्याण करने से भयभीत होगा।

पापराहित्य– मनुष्य पाप और पुण्य दो प्रकार के कर्म करता है। पुण्यकर्मो को श्रेष्ठ कर्म तथा पाप कर्मो को निषिद्ध कर्म कहा जाता है। ऋग्वेद में स्वयं को पाप कर्मो से दूर रखने की प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि हे पापदेवता! हमें पाप से दूर रखो। हमारे किए हुए पापों से हमें मुक्त करो। भूत और भविष्य में किये पापों से बचाकर कल्याण की कामना का एक मन्त्र है कि हे देवो! अतीत और भविष्यत् के पापों से बचाकर हमारा कल्याण करो। सम्पूर्ण विश्व में पापराहित्य हो जाने पर कोई भी मनुष्य हत्या, अपहरण, बम विस्फोट इत्यादि हिंसक कार्य नहीं कर सकता।

शान्ति की कामना– मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए शान्ति का होना परमावश्यक है। क्योंकि शान्तिरहित सुख कभी भी स्थायी नहीं रह सकता है। वेदों में भी शान्ति की कामना करते हुए वैदिक ऋषियों ने कहा कि **''द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव-शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।''** इसी प्रकार यदि सम्पूर्ण विश्व के नागरिक भी सर्वदा शान्ति की कामना करें तो कहीं भी अशान्ति का वातावरण नहीं हो सकता। यदि समाज में सर्वत्र शान्ति हो जाए तथा कोई भी मानव किसी को कष्ट पहुँचाने की चेष्टा न करे तो आतंकवाद पैदा ही नहीं हो सकता।

एकता व समानता–किसी भी राष्ट्र के सुदृढ़ एवं विकसित होने के लिए उस देश के नागरिकों में एकता एवं समानता की भावना का होना अनिवार्य है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त में मन, वचन एवं कर्म से एकता की भावना पर बल देते हुए मानव की मन्त्रणाओं, समितियों, विचारों, संकल्पों एवं अभिप्रायों में एकता व समानता लाने की प्रार्थनायें की गई हैं। इसी प्रकार एक और मन्त्र में कहा गया है कि मनुष्यों में न कोई बड़ा है, और न ही कोई छोटा है। एकता और समानता का यह वैदिक आदर्श ही संसार को एक परिवार की भावना में बांधने का मंगलसूत्र है। अगर समाज में सर्वत्र एकता और समानता हो जाए तो एक मनुष्य के जो दूसरे मनुष्य के प्रति ईर्ष्या, द्वेषादि भाव हैं, वह नष्ट हो जाएँगे तथा जाति और धर्म के नाम पर कोई भी आतंकी कार्यवाही नहीं होगी। कोई भी किसी को हीन दृष्टि से नहीं देखेगा।

अतः वैदिक साहित्य के पढ़ने से स्पष्ट ही है कि आतंकवाद का उन्मूलन वेदोक्त मन्त्रों में निहित है। यदि भारतीय समाज में सत्य, अहिंसा, अभय, विश्वबन्धुत्व इत्यादि नैतिक एवं आचार के सिद्धान्तों का अनुशीलन एवं दैनिक व्यवहार में आचरण किया जाय तो निश्चय ही आज का मानव सफल जीवन-यापन करेगा और समाज, देश एवं विश्व से आतंकवाद का उन्मूलन करने में भी सक्षम होगा।

अन्त में कहा जा सकता है कि यदि भारतीय गौरव को पुनः प्राप्त करना है और आतंकवाद को जड़ से समाप्त करना है तो हमें एक बार फिर से उपर्युक्त विशेषताओं से विभूषित वेदों की शरण में जाना होगा।

– वी.वी.बी.आई.एस.एण्ड आई. एस. (पी.यू.), साधु आश्रम, होश्यारपुर

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

डी.ए.वी. की वार्षिक बैठक में डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा दिया गया उद्बोधन

शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक साधना आवश्यक

एक बात मैं हमेशा कहा करता हूँ, वो असली बात जिसके लिए हम सब यहां आते हैं हमें नहीं भूलनी। जितने भी हम यहां लोग आए हुए हैं हमारे में से कोई भी ऐसा नहीं होगा जिसने कोई वित्तीय लाभ या अन्य किसी किस्म का लाभ लेना हो। सब का मकसद तो सिर्फ इतना ही है कि भगवान् तूने मुझे बहुत दिया, बहुत तेरी कृपा रही और उस कृपा के लिए तेरा शुक्रिया करने के हेतु मैं अपने हाथों से जो भी सेवा कर पाऊँ, वो मैं तेरी करूँगा। ये एक शुक्रिया का तरीका है इसीलिए आप सब यहाँ आते हो। हम अपने आपको क्यों कहते हैं कि शुक्रिया करेंगे? डी.ए.वी. का मकसद सिर्फ शिक्षा देना नहीं है। मैं बड़ी बार ये कह चुका हूँ कि अगर डी.ए.वी. का मकसद सिर्फ शिक्षा देना होता तो वो सेठ दयानन्द नाम रखकर छोड़ देते। नाम रखा गया 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक'। इसके पीछे एक दर्शन है। मकसद तो था कि अच्छे इंसान हमने पैदा करने हैं। We have to instill good values in people। जो डी.ए.वी. की विज़न आप देख रहे हैं कि बेहतर इंसान हम बना सकें। मेरी कोशिश रही है कि हर मीटिंग-बेशक वो मैनेजिंग कमेटी की हो, ट्रस्ट की मीटिंग हो, हर मीटिंग के बाद हम कोई चीज, कोई टेक-अवे यहाँ से ऐसा लेकर जाएं जो हम अपने साथ बांध सकें और ये कह सकें कि हम वहाँ गये थे, कुछ हमें मिला है सोचने के लिए-फूड फॉर थॉट। महामन्त्रीजी ने ये हुक्म दिया है कि चाय सब को अच्छी पिलाना। लेकिन वो फूड फॉर स्टॉमक होगा, लेकिन फूड फॅार थॉट मैं थोड़ा सा आपको देना चाहूँगा।

जहाँ-जहाँ भी मैं जाता रहा, हर जगह एक ही बात करता रहा कि 'ओ३म्' का जाप करो। गायत्री का जाप करो। उससे बड़े लाभ हैं। मैंने एक बार समझाने की कोशिश भी की थी कि कितने ही लाभ इससे हो सकते हैं। ओ३म् का एक मात्रा का जाप, दो मात्रा का जाप, तीन मात्रा का जाप। आप जैसे-जैसे जाप करते चले जाओगे, वैसे-वैसे आपको धनधान्य, स्वास्थ्य, आध्यात्मिकता, हर किस्म के लाभ मिलते चले जाएंगे। ऐसे ही मैं एक जगह पर गया। मैंने वहाँ पर यही बात कही। अगले चक्कर पर जब मैं वहाँ पर गया तो मुझे बताया गया कि लाभ तो हुआ कोई नहीं। या तो, जो आप कह रहे थे वो गलत है, या हमारे करने का तरीका गलत है। कर तो हम वही रहे हैं जो आपने कहा था, लेकिन लाभ तो हुआ नहीं। उस वक्त मेरे पास उस चीज का कोई जवाब नहीं था, मैं चुप कर गया। लेकिन तब से मेरे दिल के अन्दर एक यह प्रश्न घूमता रहा कि यह क्यूँ है कि कुछ को तो लाभ हो जाता है और कुछ को नहीं होता। मैंने आनन्दस्वामीजी की किताबें निकालीं और पढ़ना शुरु किया। मेरे पास उनके पुराने नोट्स पड़े हुए थे। वो नोट्स देखना शुरु किया। उनमें से एक संदर्भ मिला ''प्रश्नोपनिषद्' के अन्दर। 'प्रश्नोपनिषद्' में एक बात समझाई गई है। हम शिक्षा से संबंधित हैं इसलिए मैं शिक्षा को लेकर बात करूँगा। जैसे एम.ए. करने के लिए आपके पास बी.ए. की योग्यता होनी चाहिए, वो तीन साल में बी.ए. करना बहुत जरूरी है, इससे पहले कि आप पोस्ट-ग्रेजुएट कक्षा में जा सकें। ऋषि ने कहा कि ओ३म् के जाप का लाभ लेने के लिए एक योग्यता होनी चाहिए। वो योग्यता क्या है? योग्यता है-तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा। तीन चीजें चाहिए। अगर आपको ओ३म् के जाप का, गायत्री के जाप का पूरा लाभ चाहिए, जो आप चाहते हो, मनोकामनाएँ पूरी करनी हों तो पहले तीन चीजें अपने अन्दर करके इसके लिए योग्य बनो कि उसका लाभ आपको मिले। एक छूट सिर्फ वेद वहाँ दे देता है, कि जैसे एम.ए. करने से पहले, आपको बी.ए. करनी पड़ती है, इसमें उसने ये कह दिया कि पहले करने की जरूरत नहीं है, बेशक साथ-साथ कर लो। आप जीनों गुणों को धारण कर ओ३म् की साधना करो तो मैंने सोचा कि आप सब के साथ मैं ये तीन चीज़ें सांझी करूँ। ये तप साधना क्या है? वह है-शारीरिक तप। ब्रह्मचर्य-मानसिक साधना और जो श्रद्धा है, वह हे आत्मिक साधना। ये तीन किस्म की साधना है। शारीरिक साधना, मानसिक साधना और आत्मिक साधना। शारीरिक साधना-शरीर को स्वस्थ रखना। स्वस्थ रखने के लिए हमारे ऋषि चरक कह गये हैं-'हितभुक'-मर्यादा में खाओ, थोड़ा खाओ, उतना खाओ जितनी जरूरत है। तीसरी चीज है 'ऋत्भुक'-नेक कमाई का खाओ। कमाई गंदी न हो लेकिन ये भी ध्यान रखें कि किसी और ने बुलाया आपको खाने पर और उसकी कमाई अगर खराब होगी तो वो भी आपको बीमार कर देगी। उसका भी ध्यान रखें कि नेक कमाई सिर्फ अपने आप ही नहीं खानी, दूसरों की भी कमाई नेक हो, जिसके घर आपने जाना हो। यानी कि संग उनके साथ रखो जिनकी कमाई नेक हो। तब आपका शरीर स्वस्थ रहेगा। तो ये हो गई आपकी शारीरिक साधना।

अगली है ब्रह्मचर्य यानी मानसिक साधना। मैं चाहता हूँ कि पहले हम ब्रह्मचर्य का मतलब समझ लें कि ब्रह्मचर्य होता क्या है? अक्सर लोग ये समझते हैं कि ब्रह्मचर्य का मतलब होता है शादी न करवाना। मेरे दिमाग में एक सवाल उठा तो क्या जिसकी शादी नहीं हुई केवल वही ओ३म् का जाप कर सकता है। हमारे कितने ही ऋषि-मुनि, संन्यासी थे, भी शादी हुई थी। तो क्या वो सब अपना वैसे ही टाइम जाया करते रहे। अथर्ववेद के अन्दर जाकर देखा तो ये बात समझ आई कि ब्रह्मचर्य का असली अर्थ है ब्रह्म में विचरना। जैसे बच्चा माँ की गोद

में बैठकर बिल्कुल निश्चिंत हो जाता है, वैसे ही आप एक ब्रह्म की गोद में बैठ जाएं। जिस वक्त वह नौबत आ जाएगी और आपको अपने आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ ब्रह्म का आभास और आप उस वक्त बेफिक्र हो जाएं और आपको ये लगे कि मैं तो अब ब्रह्म की गोद में बैठा हूँ, मुझे किसी चीज की फिक्र नहीं है, ये है ब्रह्मचर्य का असली अर्थ और इसके लिए हमें क्या चाहिए-स्वाध्याय। ब्रह्मचर्य को पाने के लिए स्वाध्याय चाहिए, सत्संग चाहिए और फिर सेवा चाहिए। ये तीन चीजें होंगी तो आपकी मानसिक साधना पूरी होगी। अब इसमें स्वाध्याय को ले लेते हैं।

आप सब शिक्षा से संबंधित हो। अच्छी तरह जानते हो कि अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिएँ। जैसे-गीता पढ़ो, ऋग्वेद आदि भाष्य-भूमिका पढ़ो, सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो। इनको पढ़ने से आपका जो विचार है, जो विचारधारा है, वह लाइन से उतरेगी नहीं। अगर आप गलत चीजें पढ़ोगे तो आपका मन उधर को भागेगा, वह मानसिक साधना में आपको तंग करेगा। उसको ठीक रखने के लिए स्वाध्याय करिए। दूसरा स्वाध्याय का अर्थ है-अपने आपको पढ़ना। रोज़ देखो कि कहीं मेरे ऊपर कोई ऐसी मैल तो नहीं जम गई। अगर शरीर पर जम गई तो नहा लो। और मैं बता दूँ कि गंगा में नहाने से सिर्फ शरीर साफ होता है। ये जो शरीर है, इसको हम कहते हैं 'स्थलू शरीर'। यह नजर आता है। इसे छूआ जा सकता है। स्थूल शरीर के अन्दर जो भी गंदगी है, आप साफ कर सकते हो, देख सकते हो, और शरीर के अन्दर चले जाए तो वह है आत्मा। आत्मा कभी गंदी नहीं होती। वह तो एक समान रहती है। वह तो दु:ख से, गंद से, सफाई से, सब चीजों से परे है। उसको कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या हो रहा है बाहर। स्थूल शरीर और आत्मा के साथ जो रहता है वह है, सूक्ष्म शरीर। और ये सूक्ष्म शरीर कभी मरता नहीं है। ये जो स्थूल शरीर है, ये वृद्ध हो गया है। खराब हो गया है। बीमार हो गया है। कट गया है और जिन पांच तत्वों से ये बना था, शमशान घाट में ले जाकर उन्हीं पांच तत्वों में वापस मिला दोगे। लेकिन सूक्ष्म शरीर तो आगे चला जाएगा, वो तो कटा नहीं। और उसी के ऊपर आपके कर्मो की किताब लिखी जाती है। आसमाँ पर तो लिखा कुछ नहीं जा सकता। वो सूक्ष्म शरीर जो साथ लेकर जाएगा, वह निश्चित करेगा कि अगले जन्म में आपने किधर जाना है और क्या आपकी जिन्दगी होगी। उसको रोज पढ़ना है। अगर नहीं पढ़ोगे तो आपको तकलीफ़ देगा। मेरे सभी मित्र ये बात याद रख लें कि पढ़ना तो पढ़ेगा उस सूक्ष्म शरीर की किताब को। अभी पढ़ लो, तो समय रहते साफ कर लेना, नहीं तो अंत में जाकर पढ़नी पढ़ेगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अब सब का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप सब यहां आए। आप सब खुश रहें, खुशहाल रहें, आजाद रहें।

-प्रस्तुतकर्ता श्री राधेश्याम शर्मा,
- महासचिव डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति, नई दिल्ली

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

गौ-दान : महा-दान

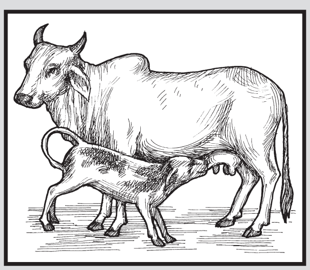

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आर्ष स्वाध्याय आत्मा का भोजन

❒ पं. उम्मेद सिंह विशारद

अर्थात्: स्वध्याय और शुभ कर्मो में मनुष्य सदा तत्पर रहे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थों में स्वध्याय पर बड़ा बल दिया है वह कहते है कि स्वाध्याय से मात्र बुद्धि बल ही नहीं बढ़ता अपितु आत्मबल की वृद्धि की अन्त: प्रेरणा भी प्राप्त होती है। आस्थाओं के अमिवर्धन एवं दृढ़ीकरण के लिए स्वाध्याय अनिवार्य है।

मानव जीवन को सुखी और सुस्कांरी बनाने के लिए सद्‌गन्थों का स्वाध्याय करना अत्यन्त आवश्यक है। स्वाध्याय मानव जीवन का सच्चा सुहृदय एवं आत्मा का भोजन है। स्वाध्याय से हमें जीवन को आदर्श बनाने की सत्प्रेरणा मिलती है। स्वाध्याय हमारे जीवन विषयक सारी समस्याओं की कुंजी है। स्वाध्याय हमारे चरित्र निर्माण में सहायक बन कर हमें प्रभु प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है। स्वाध्याय स्वर्ग का द्वार (सुख विशेष) और मुक्ति का सोपान है।

स्वाध्यायाद् योगमासीत योगात स्वध्यायमामनेत। स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते। (योग शास्त्र) अर्थात्-स्वाध्याय से योग की उपासना करे और योग से स्वाध्याय का अभ्यास करें। स्वध्याय की सम्पति से परमात्मा का साक्षात्कार होता है। गीता में भी कहा-**स्वाध्याभ्यसनं चैव वाडमंय तप उच्यते।** अर्थात्-स्वाध्याय करना ही प्राणी का तप है। **स्वाध्याय नित्य युक्त स्यादेव चैवेह कमर्णा। (मनु)** अर्थात्-स्वाध्याय और शुभ कर्म में सदा तत्पर है। **नित्यं स्वाध्यायशीलश्च दुर्गायन्ति तरन्ति ते-(शान्ति पर्व)** अर्थात्-नित्य स्वध्याये करने वाला व्यक्ति दु:खों से पार हो जाता है।

जिज्ञासा जगाइये और अपना ज्ञान भण्डार भरिये- जिज्ञासा में स्वयं अपनी एक ज्ञान शक्ति होती है। ज्यों-ज्यों जिज्ञासा गहरी होती जाती है। ज्ञान भी बढ़ता जाता है, मनुष्य की जिज्ञासु वृति ने ही उसे दार्शनिक आध्यात्मिक वैज्ञानिक एवं अन्वेषक बनाया है।

समाधान स्वाध्यास से- जिज्ञासाओं के समाधान का सबसे उपयुक्त माध्यम स्वध्याय माना गया है। स्वाध्याय योग युक्तात्मा परमात्मा प्रकाशते- (महर्षि व्यास) अर्थात-स्वाध्याय युक्त साधना से ही प्रमात्मा का साक्षात्कार होता है।

स्वाध्याय-महापुरुष ढालने का स्टील प्लान्ट- महर्षि दयानन्द कहते है कि हमारे सारे संकट और दु:ख मात्र का कारण है कि हम अपने बारे में नहीं जानते। ज्ञान की उपासना मानवता की सेवा है। इसके लिए स्वाध्याय का आश्रय लेना अनिवार्य है। महापुरुष स्वाध्याय से ही बनते है। यह भी सत्य है कि महापुरुष सदैव बने नहीं रहते किन्तु विचारो और पुस्तकों के रूप में उनकी आत्मा इस धरती पर चिरकाल तक बनी रहती है।

स्वाध्याय की उपेक्षा न करें- आध्यात्मिक ज्ञान सिद्ध करने में बुद्धि ही आवश्यक तत्व है। इसके संशोधन संवर्द्धन एवं परिमार्जन के लिए विचार को ठीक दिशा में प्रचलित करना होगा।

उत्तम पुस्तकें जागृत देवता है- आर्षग्रन्थों का नित्य स्वाध्याय से मनुष्य में देवत्व आता है।

स्वाध्याय का आधार मनन-चिन्तन- अपने विचारो, व्यवहार एवं नित्य क्रिया का मनन आवश्यक है।

स्वाध्याय जीवन को परिपूर्ण बनाता है- आर्षग्रन्थों को पढ़ने की आदत मनुष्य की जन्म जात योग्यता के विकास में सहायक होती है।

स्वाध्याय से विद्या की सम्पत्ति बढ़ाते चले- आओ हम भी अपनी शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें। अब हम धर्मानुष्ठान करेगें अधिक से अधिक पढ़ेगें।

स्वाध्याय जीवन को विकसित उच्च और पवित्र बनाने का साधन है- सत्संग की पूर्तिस्वध्याय है-अच्छी पुस्तकें सच्चे मित्र है। अपने घर में आर्ष साहित्य का पुस्तकालय बनाइये-ज्ञान देवता का मन्दिर हो। सर्वोत्कृष्ट परमार्थ-ज्ञान यज्ञ-सत शास्त्रों का अध्ययन आत्मा का उत्थान सच्ची सम्पदा ज्ञान का भण्डार है। आत्म ज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान।

आत्म निवेदन- हमें एक और बात ध्यान रखनी चाहिए कि पुस्तकें हमारे कमरे को सजाने व प्रदर्शनी लगाने के लिए ही न खरीदी जाए वरन उनका नियमित स्वाध्याय जीवन के अन्य कार्यक्रमों की तरह आवश्यक अंग बना लेना चाहिए। दैनिक दिनचर्या में कम से कम एक घन्टा तो आर्य ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। देखने में आ रहा है कि आर्य जगत में अधिकांश आर्य जन स्वाध्याय को अनिवार्य दिनचर्या नहीं बना रहे है परिणाम स्वरूप आर्ष सिद्धान्तों का अज्ञान पुरुषार्थ व पूरा क्रम का अभाव के कारण स्वरूप पूरा क्रम का अभाव के कारण परस्पर ईर्ष्या द्वेष व आर्य समाज के विकास के लिए प्रयत्नशील न होना आदि है।

आइए हम आर्य नित्य जीवन का स्वाध्याय, आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय की परम आदत डालें। तभी हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम बना सकते हैं।

यथा यथा हि पुरुष शास्त्र समधि गच्छति।
तथा तथा विज्ञानाति विज्ञान चास्य रोचते।

अर्थात्-जैसे जैसे मनुष्य शास्त्रों का अध्ययन करता है वैसे-वैसे उसकी ज्ञान राशि बढ़ती जाती है। जैसे सूर्य के उदय होने से कमल रत्न विकसित होता है। स्वाध्याय से बुद्धि का विकास होता है।

- गढ़ विकास मोहकमपुर, देहरानूद, मो. 9411512019

दीवान की चतुराई से मिला न्याय

सिखों के शासनकाल में एक सूबा था मुलतान। वहां के दीवान थे सावनमल। वे अत्यंत न्यायप्रिय थे। अत: मामलों का न्यायोचित निराकरण होता था और प्रजा उनसे संतुष्ट बनी रहती थी। एक बार दीवान साहब के पास एक विधवा महिला आई और उसने बताया कि पति के न रहने पर उसके रिश्तेदारों ने उसकी जमीन व कुएं पर जबरन अधिकार कर लिया है और उसे निरंतर प्रताड़ित कर रहे हैं। उसकी समस्या सुनकर दीवान साहब बोले-'बहन! मैं कल सुबह तुम्हारे कुएं पर स्नान करूंगा और तभी सारे मामले की छानबीन करूंगा। तुमने मेरी अदालत में शिकायत की है, बस यह किसी को मालूम मत होने देना।' दूसरे दिन दीवान साहब ने उस महिला के कुएं पर स्नान किया और फिर उसके रिश्तेदारों को बुलाकर कहा-'इस कुएं में मेरी सोने की अंगूठी गिर गई है। मैं अपने नौकरों से उसकी खोजबीन कराता हूं। मिल गई तो ठीक अन्यथा उसका मूल्य पंद्रह हजार रूपये तुम्हें देना पड़ेगा।' यह सुनते ही उस महिला के रिश्तेदार घबरा गए। उन लोगों ने कहा-'माईबाप! यह कुआं हमारा नहीं है, हमारी रिश्तेदार एक विधवा महिला का है।' तब दीवान साहब ने महिला को बुलाकर पूछा-'क्या यह कुआं तुम्हारा है?' महिला ने सहमति जताई। तब दीवान साहब ने अगला प्रश्न किया-'क्या ये तुम्हारे रिश्तेदार हैं?' उसके रिश्तेदार बोले-'यह कुआं और यह सारी खेती बाड़ी इन्हीं की है। हम तो इनके कारिदो के तौर पर यहां काम करते हैं।' तब दीवान साहब बोले-'ठीक है।' दीवान साहब के समक्ष की गई स्वीकारोक्ति के बाद उस महिला के रिश्तेदारों ने कुएं व जमीन का कब्जा छोड़ दिया। वस्तुत: प्रतिद्वंद्वी को पराजित करने के चतुराई की जरूरत होती है।

पुस्तक समीक्षा

स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द

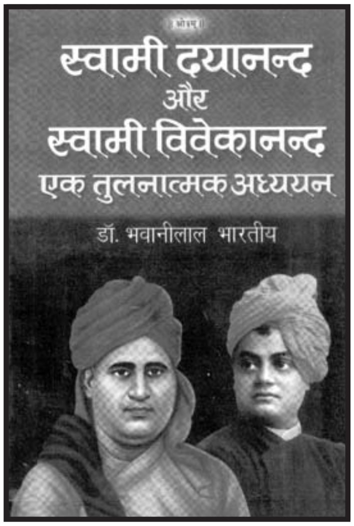

उन्नीसवीं शताब्दी में आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द ने धर्म, समाज, संस्कृति तथा राष्ट्र के क्षेत्र में सर्वत्तोमुखी चेतना जगाने के लिए अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। उसी काल में स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त से अनुप्राणित होकर देश-देशान्तर में हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता का शंखनाद किया तथा भारतीय आर्य संस्कृति की सार्वजनिकता का प्रतिपादन किया।

लेखक ने यहाँ भारतीय नवजागरण के इन्हीं महापुरुषों के कर्त्तत्व तथा उनके वैचारिक अवदान का तुलनात्मक समीक्षण इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है।

लेखक परिचय- पंजाब विश्वविद्यालय की 'दयानन्द वैदिक शोध पीठ' के सेवा निवृत्त अध्यक्ष प्रो. भवानीलाल भारतीय का जन्म राजस्थान के नागौर जिले के ग्राम परबतसर में हुआ। 'संस्कृत भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन' विषय पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने वाले डॉ. भारतीय ने राजस्थान कॉलिज के शिक्षा विभाग में बीस वर्ष तक अध्यापन किया। उन्होंने वेद, उपनिषद, धर्म, अध्यात्म, भारतीय नवजागरण तथा ऋषि दयानन्द के कृत्तित्व एवं व्यक्तित्व पर लगभग 200 ग्रन्थों की रचना की है। वेदों के आध्यात्मिक शतक, चतुर्वेद परिचय, वैदिक स्वाध्याय आदि वेद विषयक ग्रन्थों के अतिरिक्त 'वैदिक कथाओं का सच' एवं 'वेदों को अध्यात्मिक धारा' लिखकर उन्होंने वैदिक चिन्तन को नये आयाम दिये हैं।

ऋषि दयानन्द के सर्वश्रेष्ठ प्रवचन

अपने युग के अद्वितीय विद्वान वक्ता तथा धर्म संशोधक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वजीवन काल में सहस्त्रों व्याख्यान एवं प्रवचन दिये, किन्तु महाराष्ट्र की काशी पुणे नगरी में दिये गये उनके कतिपय व्याख्यानों के अतिरिक्त उनके अन्य भाषण व प्रवचन न तो लिपिबद्ध हो सके और न उनका विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है।

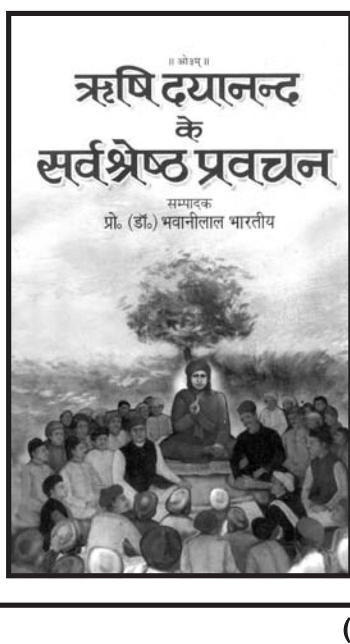

इस ग्रन्थ के अध्ययन से स्वामी दयानन्द की व्याख्यान शैली से पाठकों को रूबरू होने का अवसर मिलेगा, साथ ही उनके अपार वैदुष्य, पारगामी शास्त्र ज्ञान, उत्कृष्ट तर्क कौशल, वाक्चातुर्य तथा प्रतिपादन-कौशल से भी परिचित हो सकेंगे। अनेक ऐसे प्रश्न और प्रसंग जो अन्य ग्रन्थों में व्याख्यान नहीं किये जा सके उन्हें स्वामी दयानन्द ने इन व्याख्यानों में स्पष्ट किया है।

सत्संग भजनावली

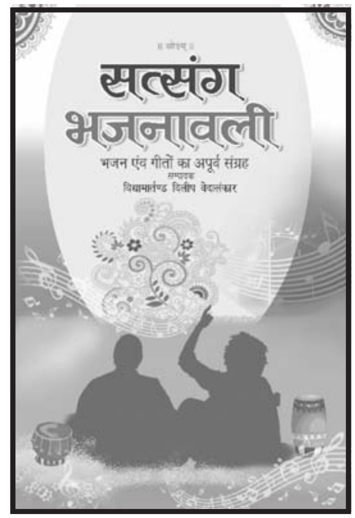

संगीत में एक ऐसी माधुर्य शक्ति है कि वह न केवल मानव में अपितु प्राणियों में भी स्पंदन एवं प्रेरणा जगाती है। साधारण भाषा में कही गई बात की अपेक्षा काव्य में प्रस्तुत की गई बात का कई गुना अधिक प्रभाव होता है। कहते है music is the universal language of mankind. यह सर्वविदित है कि वैदिक धर्म एवं आर्य सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में आर्य भजनोपदेशकों की अहम् भूमिका रही है। प्रार्थना को गीतरूप में गुनगुनाकर, गाकर हम स्वयं आनन्द और शान्ति तो पाते ही हैं, साथ ही पूरे वातावरण को भी रसमय कर देते हैं। इस पुस्तक में अनेक ज्ञात-अज्ञात विद्वानों, कवियों एवं रचनाकारों की रचनाओं को सूत्रबद्ध किया गया है। इसमें धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक महत्व के अनेक भजनों, गीतों व प्रार्थनाओं को हिन्दी, पंजाबी, गुजराती व संस्कृत भाषा में प्रस्तुत करके एक अनुपम गीत संग्रह आपके समक्ष प्रस्तुत है।

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

योग्यता नहीं, अहंकार को ही प्रदर्शित करता है अतिशय आत्म-प्रदर्शन

❑ सीताराम गुप्ता

एक व्यक्ति हिन्दी में आपसे कुछ पूछ रहा है और आप उसका जवाब अंग्रेज़ी भाषा में दे रहे हैं और वो भी अंग्रेज़ों की तरह कंधे उचका-उचका कर। यह क्या है? आपका बच्चा ऑरेंज कैंडी खाने की ज़िद् कर रहा है लेकिन आप उसे महँगी चॉकलेट दिलवाकर ही दम लेते हैं। मैं होंडा सिटी से छोटी कार नहीं रख सकता। मैं अमुक होटल या रेस्टोरेंट से कम स्तर वाले होटल में नहीं ठहर सकता या खाना खा सकता। मैं उस शख़्स के मातहत काम नहीं कर सकता। हमें ब्राह्मण या अन्य उच्च जाति का रसोइया ही चाहिए। आप ऐसी कैब नहीं भेज सकते जिसका ड्राइवर हिन्दू हो? कभी कहते हैं कि हम पठान हैं और शिकार करना हमारा पेशा है और कभी कहते हैं मेरा धर्म भारतीय है। कभी भाषा के नाम पर, कभी नस्ल व धर्म-जाति के आधार पर, कभी क्षेत्र विशेष के रूप में, कभी रुपये-पैसे के द्वारा, कभी पद-प्रतिष्ठा के द्वारा, कभी बहस-मुबाहिसों के ज़रिए, कभी बाहुबल के द्वारा तो कभी कपड़ों-गहनों की चकाचौंध से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का यह प्रयास क्या है? यह अहंकार व क्षुद्रता के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

मनुष्य में एक प्रवृत्ति होती है और वो है आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति। दिखावे की इच्छा। यह स्वाभाविक है। यह कोई बहुत बड़ा दोष भी नहीं है। आदमी अपनी योग्यता अपने हुनर को दूसरों पर प्रकट कर प्रशंसा पाना चाहता है। इस प्रशंसा पाने के लिए वो मेहनत भी कम नहीं करता। दूसरों की प्रशंसा से वह प्रेरणा पाकर और अच्छा प्रदर्शन करने का प्रयास करता है। लेकिन जब यही प्रदर्शन दूसरों पर रौब ग़ालिब करने या उनको कमतर साबित करने के लिए किया जाता है तो इसे अच्छा नहीं माना जाता। प्रदर्शन चाहे पैसे का हो, ताक़त का हो, पद-प्रतिष्ठा का हो या अपनी योग्यता का या अन्य किसी भी चीज़ का जब यह एक हद से अधिक हो जाता है तो यह एक अवगुण बन जाता है। अहंकार की श्रेणी में आ जाता है। कई बहुत पढ़े-लिखे लोग हैं। पी.एच.डी. और डी. लिट. ही नहीं न जाने कितने पढ़े-लिखे? कोई सीमा नहीं उनके ज्ञान की, उनकी विद्वता की। अनेक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण काम किया व अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे। सभी जानते-मानते हैं पर स्वयं कभी नहीं जताते। कभी अपने नाम से पूर्व डॉक्टर नहीं लिखते या बोलते। सादा जीवन उच्च विचार को चरितार्थ करते हैं। यह शिष्टता व निरंहकारिता है। हमारी वेशभूषा नहीं हमारा आचरण हमारी पहचान हो। हमारी डिग्री नहीं उसका उपयोग बतलाए कि हम कौन हैं। आजकल बहुत से लोग दो महीने का योग विषयक कोई कोर्स करके अथवा मात्र सात-आठ घंटे का रेकी कोर्स करने के बाद ही अपने नाम से पूर्व डाक्टर लिखकर स्वयं को डॉक्टर कहलवाने लगते हैं। जब हम बाहरी प्रतीकों या छद्मावरण के सहारे स्वयं को बतलाने का प्रयास करते हैं तो वह छिछोरापन व अहंकार ही है।

कुछ लोग होते हैं जो अपने आपको बहुत मेंटेन करके रखते हैं। डिज़ायनर शर्ट-पैंट या कुर्ता-पाजामा व जैकेट। ब्रांडेड जूते, घड़ी, चश्मा। उँगलियाँ शोरूम बनी रहती हैं मोटी-मोटी क़ीमती रत्नों से जड़ीं अँगूठियों का। माथे पर चंदन का तिलक। दाएँ हाथ की कलाई पर हमेशा सजा रहता है कई बार लपेट देकर बाँधा गया मोटा सा कलावा। गले में कभी मोटी सी सोने की ज़ंजीर तो कभी स्फटिक, रुद्राक्ष अथवा अन्य क़ीमती पत्थरों की माला। बहरूपियापन लगता है ये सब। आप जो वास्तव में हैं अपने कपड़े-लत्ते व आभूषणों अथवा बाहरी चिह्नों से नहीं अपने आचरण से बतलाएँ।

आपकी डिग्री को देखकर लोग आपको डॉक्टर कहें या आपके तिलक को देखकर लोग आपको पंडितजी कहें या आपकी दाढ़ी-मूछों या चोग़े के स्टाइल को देखकर या हाथ में पकड़ी हुई किताबों को देखकर लोग आपका मूल्यांकन करें तो स्पष्ट है कि प्रतीकों या बाह्य साधनों के माध्यम से आप स्वयं ऐसा कहलवाना चाह रहे हैं। इससे आप जो वास्तव में हैं अच्छे या बुरे, उपयोगी या अनुपयोगी उसे दबाना या छुपाना चाह रहे हैं। मज़ा तो तब है कि लोग आपके व्यवहार, आपके आचरण, आपके योगदान व आपकी सेवाओं के लिए स्वयं आपका सही मूल्यांकन करें। जब तक हम स्वयं को सही मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत नहीं कर देते हमारा वास्तविक विकास संभव नहीं।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

पाठ–ईमानदारी का

❒ ओमप्रकाश बजाज

बात 60 वर्ष से अधिक पुरानी है, देश विभाजन की विभीषिका को झेल कर, पढ़ाई अधूरी छोड़ कर, परिवार हेतु दो जून की रोटी जुटाने मैंने कुछ ही दिन पूर्व कानपुर में एक बीमा कम्पनी में 80 रूपये मासिक वेतन पर नौकरी शुरु की थी, उन दिनों बैंकों बीमा कंपनियों आदि में काम के घंटे नियत नहीं होते थे, प्रातः आठ साढ़े आठ बजे दफ्तर पहुंच जाते थे, छुट्टी रात को दस ग्यारह बजे, कभी कभी उससे भी देर में हुआ करती थी, दफ्तर और घर में चार मील की दूरी होने तथा पैदल आने जाने के कारण घर से काफी जल्दी निकलना पड़ता था तथा काफी देर रात गए लौट पाता था, बहरहाल सिलसिला चल रहा था।

31 दिसम्बर का दिन था, वार्षिक लेखाबंदी हो रही थी, दिन भर काम की भीड़भाड़ रही। करते–करते रात का सवा एक बज गया। थक कर चूर हो गया था। खैर छुट्टी हुई, बाहर आया तो देखा बारिश हो रही है। दिसम्बर का अंत, कानपुर की सर्दी, ऊपर से वर्षा, बदन पर सूती कमीज–पाजामा, घर तक चार मील पैदल जाना रात के उस पहर में, मन बहुत खराब हुआ। खैर जाना तो था ही, बड़े बाबू से दफ्तर की साईकिल ले जाने की अनुमति ले ली और बारिश में भीगते तथा सर्दी से ठिठुरते हुए घर की ओर रवाना हुआ।

थोड़ा सा ही आगे गया था कि साईकिल का पिछला पहिया बैठ गया। पता चला कि पंचर हो गया है। उस जमाने में, रात के उस वक्त पंचर कहां से जुड़ता, साईकिल घसीटते हुए चला, भीषण सर्दी, वर्षा की बौछारें, तन पर भीगा हुआ कमीज–पाजामा। ऐसे में साईकिल को घसीटते हुए लगभग साढ़े–तीन मील का बाकी सफर तय करना था। मन बेहद खिन्न हुआ। सोचा, हे भगवान, मैं ने कौन सा ऐसा पाप किया है जिस की तू यह सजा दे रहा है। अचानक ध्यान में आया कि मैंने चोरी की है। प्रातः दफ्तर की डाक खोलते समय एक लिफाफे पर एक आने का एक डाक टिकट बिना कैंसल हुआ दिखाई दिया था। यह सोच कर कि यह कम्पनी के हिसाब में तो लाया नहीं जा सकता। रद्दी की टोकरी में फैंकने का मन नहीं हुआ। 18–19 साल की कच्ची उम्र ही तो थी, लिफाफे से टिकट वाला उतना टुकड़ा फाड़ कर जेब में रख लिया था, अब भी पड़ा था, भीग रहा था। शरीर किसी भी हालत में हो दिमाग तो अपना काम करता ही रहता है। दिमाग में यही आया कि मैंने यह एक आने की चोरी की है क्योंकि यह टिकट मेरा नहीं था, पंचर बनवाने का खर्च तो होगा ही। यह जो कष्ट उठाना पड़ रहा है यह गलत काम करने की सजा है, फौरन जेब से भीगा हुआ वह टिकट निकाल कर बारिश के बहते हुए पानी में डाल दिया। गोया पाप से मुक्ति पा ली।

जीवन के आरम्भ में घटित इस घटना ने मन मस्तिष्क पर एक अमिट निशान छोड़ दिया। साठ वर्षो के इस अंतराल में बहुत से अवसर आए जब मन दो राहे पर आ खड़ा हुआ, विचलित होने को हुआ। मगर वर्षो पूर्व की इस घटना की याद ने फौरन मन को दृढ़ करके, सम्भाल कर सही और सीधी ईमानदारी की राह पर डाल दिया।

विजय विला, 166–कालिंदी कुंज, पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर–452018, म.प्र.,
मो. 9826496975, फोन: 0731–2593443

अपील

सभी आर्य बहनों से नम्र निवेदन कर रही हूं कि वह ऋषि भूमि टंकारा से अवश्य ही जुड़े, वहां पर होने वाले कार्यो को ध्यान से देखें। बड़े ही अच्छे अच्छे कार्य हो रहे हैं। उन कार्यो में अपना सहयोग देकर ऋषि ऋण उतारने की कोशिश करें और यह हम आर्य बहनों का कर्तव्य भी है। टंकारा हमारा तीर्थ स्थल है, वहां कार्यो की बहती गंगा है–गुरुकुल में बच्चों को पढ़ा सकते हैं, छोटे बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं–विशेषकर महिला सिलाई केन्द्र में सहयोग देकर बड़ा ही भला काम कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वहां लगातार रहना होगा। वर्ष में दो तीन बार जाकर सेवा कर सकते हैं। जो बहन वहां जाने की इच्छा रखती हो, वह कृपया मेरे से सम्पर्क करें, तो मैं विस्तृत रूप से बताकर पूरा सहयोग दूंगी।

– राज लूथरा, जी आई 976, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली–110023, मो. 9971206548

आवश्यकता है

टंकारा में श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय को गुरुकुल परम्परा में निष्ठावान अध्यापकों की आवश्यकता है:–

- ❏ कक्षा 6 से 10 तक सामान्य अंग्रेजी के साथ भूगोल, इतिहास आदि पढ़ाने में सक्ष्म हो।
- ❏ कक्षा 6 से 10 तक विज्ञान तथा गणित आदि पढ़ाने में सक्ष्म हो।
- ❏ गुरुकुल झज्जर के पाठ्यक्रमानुसार शास्त्री तथा उत्तर मध्यमा की कक्षाओं में संस्कृत व्याकरण, साहित्य, दर्शन तथा ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थ पढ़ाने में सक्ष्म हो।
- ❏ गुरुकुल के अन्य कार्यो को करने में रूचि रखता हो।

वेतनमान: योग्यतानुसार दिया जायेगा। आवास तथा भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होगी। आवेदक अपना बायोडेटा पासपोर्ट साईज की फोटो के साथ आवेदन भेज सकते है।

आचार्य रामदेव शास्त्री- श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
डाक- टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात) पिन-363650,
मोबाइल-0991321448, E-mail:tankaratrust@gmail.com

यज्ञ से विभिन्न रोगों की चिकित्सा

यज्ञ पर्यावरण की शुद्धि का सर्वश्रेष्ठ साधन है। यह वायुमंडल को शुद्ध रखता है। वर्षा होकर धनधान्य की आपूर्ति होती है। इससे वातावरण शुद्ध व रोग रहित होता है। एक ऐसी औषध है जो सुगंध भी देती है, पुष्टि भी देती है तथा वातावरण को रोगमुक्त रहता है। इसे करने वाला व्यक्ति सदा रोग मुक्त व प्रसन्नचित रहता है। इतना होने पर भी कभी कभी मानव किन्ही संक्रमित रोगाणुओं के आक्रमण से रोग ग्रसित हो जाता है। इस रोग से छुटकारा पाने के लिए उसे अनेक प्रकार की दवा लेनी होती है। हवन यज्ञ जो बिना किसी कष्ट व् पीड़ा के रोग के रोगाणुओं को नष्ट कर मानव को शीघ्र निरोग करने की क्षमता रखते हैं। इस पर अनेक अनुसंधान भी हो चुके हैं तथा पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। डा. कुन्दन लाल अग्निहोत्री ने इस विषय में सर्वप्रथम एक सुन्दर पुस्तक लिखी है ''यज्ञ चिकित्सा''। प्रस्तुत लेख के रचयिता ने यज्ञ थैरेपी नाम से एक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक का प्रकाशन गोविंद राम हासानंद 4408, नयी सड़क, दिल्ली ने किया है। इन पुस्तकों में अनेक जड़ी बूटियों का वर्णन किया गया है, जिनका उपयोग विभिन्न रोगों में करने से बिना किसी अन्य औषध के प्रयोग के केवल यज्ञ द्वारा ही रोग ठीक हो जाते हैं। इन पुस्तकों के आधार पर हम कुछ रोगों के निदान के लिए उपयोगी सामग्री का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि यदि इस सामग्री के उपयोग से पूर्ण आस्था के साथ यज्ञ किया जावे तो निश्चित ही लाभ होगा।

कैंसर नाशक हवनः- गुलर के फूल, अशोक की छाल, अर्जन की छाल, लोध, माजूफल, दारुहल्दी, हल्दी, खोपारा, तिल, जो , चिकनी सुपारी, शतावर , काकजंघा, मोचरस, खस, म्न्जीष्ठ, अनारदाना, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, गंधा विरोजा, नारवी, जामुन के पत्ते, धाय के पत्ते, सब को सामान मात्र में लेकर चूर्ण करें तथा इस में दस गुना शक्कर व एक गुना केसर डालकर दिन में तीन बार हवन करें।

2. संधि गत ज्वर- (जोड़ों का दर्द (संभालू) निर्गुन्डी के पत्ते, गुग्गल, सफेद सरसों, नीम के पत्ते, गुग्गल, सफेद सरसों, नीम के पत्ते, रल आदि का संभाग लेकर चूरन करें, घी मिश्रित धुनी दें, हवन करीं

निमोनियां नाशक पोहकर मूल, वाच, लोभान, गुग्गल, अधुसा, सब को संभाग ले चूरन कर घी सहित करें व धुनी दें।

जुकाम नाशकः खुरासानी अजवायन, जटामासी , पश्मीना कागज, लाला बुरा ,सब को संभाग ले घी सचूर्ण कर हित हवन करें व धुनी दें।

पीनस (बिगाड़ा हुआ जुकाम):- बरगद के पत्ते, तुलसी के पत्ते, नीम के पत्ते, वायव्यडिंग, सहजने की छाल, सब को संभाग ले चूरन कर इस में धुप का चुरा मिलाकर हवन कारें व धुनी दें

श्वास- कास नाशक बरगद के पत्ते, तुलसी के पत्ते, वच, पोहकर मूल, अडूसा - पत्र, सब का संभाग कर्ण लेकर घी सहित हवं कर धुनी दें।

सर दर्द नाशकः काले तिल और वायवडिंग चूरन संभाग ले कर घी सहित हवं करने से व धुनी देने से लाभ होगा ।

3 चेचक नाशक- खसरा गुग्गल, लोभान, नीम के पत्ते, गंधक , कपूर, काले तिल, वायवासिंग, सब का संभाग चूरन लेकर घी सहित हवन करें व धुनी दें

जिह्वा तालू रोग नाशक-मुलहठी, देवदारु, गंधा विरोजा, राल, गुग्गल, पीपल, कुलंजन, कपूर और लोभान सब को संभाग ले घी सहित हवन करीं व धुनी दें।

टायफायड- यह एक मौसमी व भयानक रोग होता है। इस रोग के कारण इससे यथा समय उपचार न होने से रोगी अत्यंत कमजोर हो जाता है तथा समय पर निदान न होने से मृत्यु भी हो सकती है । उपर्वर्णित ग्रन्थों के आधार पर यदि ऐसे रोगी के पास नीम, चिरायता, पितपापदा, त्रिफला, आदि जड़ी बूटियों को समभाग लेकर इन से हवन किया जावे तथा इन का धुआं रोगी को दिया जावे तो लाभ होगा ।

ज्वर- ज्वर भी व्यक्ति को अति परेशान करता है किन्तु जो व्यक्ति प्रतिदिन यग्य करता है, उसे ज्वर नहीं होता। ज्वर आने की अवास्था में अजवायन से यज्ञ करें तथा इस की धुनी रोगी को दें। लाभ होगा।

नजला, सिरदर्द जुकाम-यह मानव को अत्यंत परेशान करता है । इससे श्रवण शक्ति, आँख की शक्ति कमजोर हो जाते हैं तथा सर के बाल सफेद होने लगते हैं। लम्बे समय तक यह रोग रहने पर इससे तायिफायीद या दमा आदि भयानक रोग भी हो सकते हैं। इन के निदान के लिए मुनका से हवन करें तथा इस की धुनी रोगी को देने से लाभ होता है।

नेत्र ज्योति-नेत्र ज्योति बढ़ाने का भी हवन एक उत्तम साधन है। इसके लिए हवन में शहद की आहुति देना लाभकारी है। शहद का धुआं आँखों की रौशनी को बढ़ता है, मस्तिष्क को बल, मस्तिष्क की कमजोरी मनुष्य को भ्रांत बना देती है। इसे दूर करने के लिए शहद तथा सफेद चन्दन से यग्य करना चाहिए तथा इस का धुन देना उपयोगी होता है।

वातरोग- वातरोग में जकड़ा व्यक्ति जीवन से निराश हो जाता है। इस रोग से बचने के लिए यज्ञ सामग्री में पिप्पली का उपयोग करना चाहिए। इस के धुएं से रोगी को लाभ मिलता है।

मनोविकार-मनोरोग से रोगी जीवित ही मृतक समान हो जाता है। इस के निदान के लिए गुग्गल तथा अपामार्ग का उपयोग करना चाहिए। इस का धुआं रोगी को लाभ देता है।

मधुमेह-यह रोग भी रोगी को अशक्त करता है। इस रोग से छुटकारा पाने के लिए हवन में गुग्गल, लोबान, जामुन वृक्ष की छाल, करेला का द्न्थल, सब संभाग मिला आहुति दें व् इस की धुनी से रोग में लाभ होता है।

उन्माद मानसिक-यह रोग भी रोगी को मृतक सा ही बना देता है। सीताफल के बीज और जटामासी चूरन समभाग लेकर हवन में डालें तथा इस का धुआं दें तो लाभ होगा।

चित्भ्रम- यह भी एक भयंकर रोग है। इस के लिए कचूर ,खास, नागरमोथा, महया , सफेद चन्दन, गुग्गल, अगर, बड़ी इलायची, नारवी और शहद संभाग लेकर यग्य करें तथा इसकी धुनी से लाभ होगा।

पीलिया- इस के लिए देवदारु, चिरायत, नागरमोथा, कुटकी, वायविडंग संभाग लेकर हवन में डालें। इस का धुआं रोगी को लाभ देता है।

क्षय रोग-यह रोग भी मनुष्य को क्षीण कर देता है तथा उसकी मृत्यु का कारण बनता है। ऐसे रोगी को बचाने के लिए गुग्गल, सफेद चन्दन, गिलोय, बांसा(अडूसा) सब का- 100 ग्राम का चूरन कपूर 5 ग्राम, 100 ग्राम घी, सब को मिला कर हवन में डालें। इसके धुएं से रोगी को लाभ होगा।

मलेरिया- मलेरिया भी भयानक पीड़ा देता है। ऐसे रोगी को बचाने के लिए गुग्गल, लोबान, कपूर, हल्दी, दारुहल्दी, अगर, वायवडिंग, बाल्छाद, (जटामासी) देवदारु, बच, कठु, अजवायन, नीम के पते समभाग लेकर संभाग ही घी डाल हवन करें। इस का धुआं लाभ देगा।

अपराजित या सर्वरोग नाशक धुप-गुग्गल, बच, गंध, तरीन, नीम के पत्ते, अगर, रल, देवदारु, छिलका सहित मसूर संभाग घी के साथ हवन करें। इसके धुआं से लाभ होगा तथा परिवार रोग से बचा रहेगा।

संदीप आर्य, सान्ताक्रुज (पूर्व)मुम्बई- 400055, 09969037837

છેવટે હાથ ફેરવીને પણ કાન તો પકડવો જ પડશે

"વૈદિક સંસ્કાર" માસિક હિન્દી પત્રિકાના વર્ષ ૪, અંક ૭ – મે ૨૦૧૫ના અંકના સમ્પાદકીયનો ગુજરાતી અનુવાદ

રમેશ મહેતા (ટંકારામિત્ર)

નારી અશિક્ષા માટે સુધાર, કાચીવયમાં વિવાહ તથા ગર્ભધારણનો નિષેધ, સતીપ્રથા ઉન્મૂલન, વિધવા પુનર્વિવાહ આદી નારી સશક્તિકરણની દિશામાં વર્તમાનમાં કરવામાં આવતા સમસ્ત પ્રયાસો તથા અમાનવીય ભેદભાવને માધ્યમ બનાવીને સમાજના નિમ્ન વર્ગનું શોષણ, ઉત્પીડનનો પ્રમુખ આધાર અસ્પૃશ્યતા નિવારણ માટે કરવામાં આવી રહેલા કાર્યો આદિ અનેક આંદોલનો અને ધર્મનું દિગ્દર્શન કરાવીને ધર્મનું કાર્ય માનવની અન્દર મનુષ્યતાનું નિર્માણ કરવું, ન કે ધર્મના નામે અન્ધવિશ્વાસનો પ્રચાર કરીને પાખંડ ફેલાવવા અને મનુષ્યોમાં ફાટફૂટ પડાવી, ભારતીય સંસ્કૃતિના મૂળાધાર વેદને સામે રાખીને સમ્પૂર્ણ માનવ જાતિને ***વસુધૈવ કુટુમ્બકમ્*** અર્થાત્ વસુધાભરના લોકો એક પરિવાર તથા આ પરિવારના સદસ્યોને ***કૃણ્વન્તો વિશ્વમાર્યમ્*** અર્થાત્ સમસ્ત સદસ્યોને શ્રેષ્ઠ બનાવો, તેમ છતાં ન બને તો શ્રેષ્ઠ લોકો આર્ય તથા અશ્રેષ્ઠ લોકો અનાર્ય એવો સન્દેશ આપીને જન્મના જાતિવાદના દંશથી માનવ જાતિને ઉગારવા માટે જેટલા પણ કાર્યો કરવામાં આવે અને એનું શ્રેય કોઈપણ મહાપુરુષ તથા કોઈપણ સરકાર કે કોઈપણ દેશને આપવામાં આવે, અપિતુ એના મૂળમાં જો કોઈ નામ હોય તો એ એકમાત્ર મહર્ષિ દયાનન્દજીનું જ હશે. જેમણે વેદોને સંસારભરના સમસ્ત મનુષ્યો માટે આ નશ્વર સંસારમાં કઈ રીતે સુખ-શાન્તિપૂર્વક રહીને મનુષ્ય પોતાના એકમાત્ર લક્ષ્ય જીવન યાત્રાઓના આવાગમનમાંથી મુક્તિ અર્થાત્ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવા માટે પરમપિતા દ્વારા મનુષ્યની ઉત્પત્તિના સમયે આપેલ જ્ઞાન નિરુપિત કરીને વેદોને સાર્વકાલિક અને સાર્વભૌમ કહ્યા. વેદ સર્વ સત્ય વિદ્યાઓનું પુસ્તક છે, વેદને ભણવા-ભણાવવા, સાંભળવા-સંભળાવવા સર્વ આર્યો (શ્રેષ્ઠ વ્યક્તિઓનો) પરમ ધર્મ છે. એની તમે જ નગારાના ડંકે ઘોષણા કરી અને એને તમે સ્થાપેલ સંસ્થા આર્યસમાજના ત્રીજા નિયમમાં સ્થાન આપ્યું.

તમે મત, પન્થ, જાતિ, દેશની સીમાઓ અને સ્વહિતાર્થથી ઊપર ઊઠીને સમ્પૂર્ણ માનવજાતિના ઉપકારાર્થ જીવનમાં લગભગ ૧૭ વાર પ્રાણઘાતક વારને સહન કર્યા. અનેક વાર અપમાન – તિરસ્કારને સહન કરીને, ઈંટો-પથ્થર ખાધા અને સત્યધર્મની બલિવેદી ઊપર વિષપાન કરીને પોતાને આહૂત કરી દીધા. આ મહાન આત્મા દ્વારા ધર્મના શુદ્ધિકરણ, દેશની સ્વતન્ત્રતા અને વિશુદ્ધ માનવવાદની સ્થાપના માટે આપેલ યોગદાન ઈતિહાસના પૃષ્ઠો પર સ્વર્ણાક્ષરોમાં અંકિત છે જેનો દેશ-વિદેશની અનેક વિભૂતિઓએ ખુલ્લા મનથી સ્વીકાર કર્યો છે.

૧૫ મે ૨૦૧૫ના દૈનિક ભાસ્કરના મુખપૃષ્ઠ પર ઉત્તર પ્રદેશમાં છોકરીઓની શાળાઓમાં પુરુષ અધ્યાપકો, પ્રધાનાચાર્ય અથવા તો હેડમાસ્તરની નિમણુંક ન કરવા માટે માધ્યમિક શિક્ષા બોર્ડના નિયમને ઉત્તર પ્રદેશના ન્યાયાલયે યોગ્ય ઠરાવ્યો છે તથા આ નિયમની વિરુદ્ધમાં શિક્ષક મનમોહન મિશ્રાએ કરેલ અપીલને ફગાવી દીધી છે.

શા માટે? છોકરીઓનીશાળાઓમાં પુરુષ અધ્યાપકો દ્વારા ભણાવવામાં શું ખરાબી છે? દેશના બીજા રાજ્યો, આખાય દેશની કૉલેજો - ખાસ કરીને સંયુક્ત રુપે સહ-શિક્ષા ધરાવતી સ્કૂલ-કૉલેજોમાં બંને પ્રકારના અધ્યાપકો કાર્ય કરી રહ્યા છે. તો પછી એવું શું બન્યું કે ઉત્તર પ્રદેશના માધ્યમિક શિક્ષા બૉર્ડને આવો નિયમ બનાવવા માટે બાધ્ય બનવું પડ્યું કે છોકરીઓની શિક્ષણ સંસ્થાઓમાં પુરુષ વર્ગને અધ્યાપન કાર્યમાં જોડવામાં નહીં આવે અને આ નિયમને હાઈકૉર્ટમાં પડકારવામાં આવતા હાઈકૉર્ટે પણ આ નિયમને યોગ્ય ઠેરવ્યો છે. શા માટે? ? ? આવો આપણે પરમ પિતા પરમાત્મા દ્વારા સમસ્ત માનવજાત માટે પ્રદાન કરવામાં આવેલ મનનશીલતાના ગુણ જેના કારણે જ માનવનું નામ મનુષ્ય કહેવાયું નો ઉપયોગ કરીને શા માટે પ્રશ્નનું સમાધાન કરવાનો પ્રયત્ન કરીએ અને એ પણ જાણીએ કે આ વિષયમાં મહર્ષિ દયાનન્દની માન્યતા શું છે?

આ વ્યવસ્થાના મૂળમાં ક્યાંકને ક્યાંક ગત દિવસોમાં દેશમાં વ્યભિચાર, બલાત્કાર, નાબાલિક બાલિકાઓ, ના, હજુ દૂધમુંહી બાલિકોઓનું યૌન ઉત્પીડનની ઘટનાઓમાં ખબ જ વૃદ્ધિ થઈ છે તથા આ ઘટનાઓથી વિદ્યાના પવિત્ર મન્દિર કહેવાતા ગુરુકુલોના સ્થાને ખૂલેલા ઈસાના (કૉન્વેન્ટ) સ્કૂલો પણ બકાત નથી રહ્યા.

મહર્ષિ દયાનન્દજીએ સહશિક્ષાનો જ ઘોર વિરોધ કર્યો છે. એમણે પોતાના અમર ગ્રન્થ સત્યાર્થપ્રકાશના ત્રીજા સમ્મુલ્લાસમાં અધ્યયન – અધ્યાપન વિષય પર પ્રકાશ પાડતા લખ્યું છે કે .... આઠ વર્ષના થતાં જ છોકરાને છોકરાઓની અને છોકરીને છોકરીઓની શાળામાં મોકલી દેવા. જો અધ્યાપક પુરુષ કે સ્ત્રી દુષ્ટાચારી હોય તો તેમને શિક્ષણ કાર્યમાં રાખવા નહીં. પરન્તુ જે પૂર્ણ વિદ્યાયુક્ત ધાર્મિક હોય, તેઓ ભણાવવા અને શિક્ષણ આપવા યોગ્ય છે. દ્વિજ પોતાના ઘરમાં છોકરાના યજ્ઞોપવીત અને કન્યાના પણ યથાયોગ્ય સંસ્કાર કરીને યથોક્ત આચાર્યકુલ અર્થાત્ પોત-પોતાની પાઠશાળામાં મોકલી દે. વિદ્યા ભણવાના સ્થાન એકાન્ત દેશમાં હોવા જોઈએ. જો ત્યાં અધ્યાપિકા અને અધ્યાપક પુરુષ કે નોકર – ચાકર હોય. કન્યાઓની પાઠશાળામાં બધી સ્ત્રિઓ અને પુરુષોની પાઠશાળામાં બધાં પુરુષો જ હોવા જોઈએ. સ્ત્રિઓની પાઠશાળામાં પાંચ વર્ષના બાળક અને છોકરાઓની પાઠશાળામાં પાંચ વર્ષની કન્યા પણ પ્રવેશ ન કરે અર્થાત્ જ્યાં સુધી તેઓ બ્રહ્મચારી કે બ્રહ્મચારિણી રહે ત્યાં સુધી સ્ત્રી કે પુરુષના દર્શન, સ્પર્શન, એકાન્ત સેવન, ભાષણ, વિષયકથા, પરસ્પર ક્રીડા, વિષયનું ધ્યાન અને સંગ – આ આઠ પ્રકારના મૈથુનોથી દૂર રહે અને અધ્યાપલોકો એમને આવી વાતોથી બચાવે, જેથી ઉત્તમ

વિદ્યા, શિક્ષા, શીલ સ્વભાવ, શરીર અને આત્મા બળયુક્ત થઈને નિત્ય આનન્દની વૃદ્ધિ કરી શકે.

પાઠશાળાઓથી નગર એક યોજન એટલે કે ચાર કોસ દૂર હોવા જોઈએ. બધાંને એક સમાન વસ્ત્ર, ખાન-પાન, આસન, મળવા જોઈએ. પછી ભલે તે રાજકુમાર કે રાજકુમારી હોય, કે પછી દરિદ્ર સન્તાન હોય.

બધાંએ તપસ્વી બનવું જોઈએ. એમના માતા-પિતા પોતાના સન્તાનોને અથવા સન્તાન પોતના માતા-પિતાને ન મળી શકે અને ન કોઈ પ્રકારનો પત્ર-વ્યવહાર એકબીજા સાથે કરી શકે, જેથી સંસારી ચિંતાઓથી મુક્ત થઈને માત્ર વિદ્યાની વૃદ્ધિ કરવાની ચિંતા જ રાખે. જ્યારે જ્યારે ભ્રમણ માટે બહાર જાય ત્યારે અધ્યાપક પણ એમની સાથે રહે જેથી કોઈજાતની કુચેષ્ટા ન કરી શકે કે ન તો આળસ - પ્રમાદ કરે.

આજથી ૧૪૦ વર્ષ પહેલા મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતીએ અધ્યયન – અધ્યાપન વિષય પર એટલો સરસ પ્રકાશ પાડ્યો છે, જેમાં એમણે આઠ પ્રકારના મૈથુન ગણાવીને આપણને સતર્ક કર્યા છે કે આપણે સચેત કર્યા છે કે આપણે સન્તાનો કે જેમને શિક્ષા પ્રાપ્ત કરવાની આયુ સુધી બ્રહ્મચારી કે બ્રહ્મચારિણીના નામથી સમ્બોધિત કરીએ છીએ, એમની આયુના આ કાળખંડને બ્રહ્મચર્યાશ્રમ કહે છે. આજના અધિકાંશ લોકોને બ્રહ્મચર્ય શબ્દના અર્થનું સાચું જ્ઞાન નથી. બ્રહ્મચર્ય શબ્દનો અર્થ છે – ***ઇન્દ્રિયોનો સંયમ*** - મહર્ષિજીએ સત્યાર્થપ્રકાશમાં આપેલ સન્દેશનો સાર એ છે કે અધ્યયન કાળખંડ સુધી અર્થાત્ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ અવસ્થામાં સન્તાનોને વિષયાસક્ત તથા સંસારી ચિંતાઓથી દૂર રાખીને માત્ર વિદ્યાની વૃદ્ધિની ચિંતા કરે એવી જ રીતે રાખવા. એટલા માટે માતા-પિતાઓએ પણ સન્તાનો સાથે કોઈજાતનો સંબંધ ન રાખવો જોઈએ.

મહર્ષિજીના જે પણ દિશા-નિર્દેશ છે એ એમના પોતાના નથી. એમણે જ્યાં કયાંય પણ કંઈક કહ્યું કે લખ્યું છે એ વેદ અને વેદાનુકૂળ શાસ્ત્રોના આધારે માનવમાત્રના હિતને ધ્યાનમાં રાખીને લખ્યું કે કહ્યું છે. પણ માણસ એટલો સ્વાર્થી બની ગયો છે કે એને પોતાનું હિત-અહિત દેખાતું જ નથી કે પછી જ્યારે એને સમજાય છે ત્યારે ઘણું મોડું થઈ ગયું હોય છે.

માધ્યમિક શિક્ષા સેવા ચયન બોર્ડ દ્વારા નક્કી કરેલા નિયમ અને ઉપરોક્ત નિયમોની ઉત્તર પ્રદેશના ઉચ્ચ ન્યાયાલય દ્વારા પુષ્ટિ મહર્ષિ દ્વારા કહેલા અધ્યયન – અધ્યાપન વિષયનો અંશ માત્ર છે. યોગ્ય તો એ હતું કે સમય રહેતા આપણે મહર્ષિના દિશા-નિર્દેશો અને મૂળ સન્દેશ - ***વેદ તરફ પાછા વળો*** – ને અપનાવી લઈએ તો ઠીક છે નહીં તો આપણે સમસ્યાઓ સામે ઝઝૂમીને ક્ષતિ ઉઠાવીને પણ ઋષિના માર્ગે પાછા વળવું પડશે.

આવો સમય રહેતા મહર્ષિના બતાવેલા માર્ગ વેદ તરફ પાછા વળીએ. કારણ કે વેદ સર્વ સત્ય વિદ્યાઓના પુસ્તક છે, વેદને ભણવા - ભણાવવા અને સાંભળવા – સંભળાવવા સર્વ આર્યોનો પરમ ધર્મ છે.

सुख का अनुभव

❒ डा. अशोक आर्य

प्रत्येक व्यक्ति सुखी होना चाहता है परन्तु सुख प्राप्ति के कार्य नहीं करना चाहता जिसके पास आनन्द है उसके निकट होते हुए भी उसे प्राप्त करने का प्रयास नहीं करना चाहता। ईश्वरसत, चित्त, आनन्द स्वरूप है, उसे प्राप्त करके ही हम सुखी रह सकते है। ईश्वर प्राप्ति का साधन योग साधना है। योग के पहले दो अंग यमनियम है इनको दैनिक जीवन अर्थात अपने व्यवहार काल में आचरण करना चाहिए। शेष अंगो पर हमें निरन्तर अभ्यास करते रहना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी महाराज सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है जो उपासना का आरम्भ करना चाहे वह किसी से वैर न करे। हम ईश्वर को चक्षुओं से देखना चाहते है। ईश्वर को आँख से देखने का प्रश्न कहाँ उठता है जबकि आजकल हम अपनी आत्मा को शरीर से निकलते नहीं देख सके। ईश्वर ज्ञान की वस्तु हैं उसका अनुभव आत्मा में योग द्वारा होता हैं। वैसे ईश्वर का प्रत्यक्ष भी होता है जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता है और संसार की रचना विशेष और ज्ञान आदि विशेष से ईश्वर का प्रत्यक्ष भी होता है तब चोरी आदि पाप कर्म करने से मन के भीतर से भय, लज्जा, शंका होती है और यज्ञ आदि धार्मिक कार्य, परोपकार करने पर मन में अभय, निशक्त और आनन्द अनुभव वह जीवात्मा की ओर से नहीं परमात्मा की ओर से होता है जब जीवात्मा शुद्ध हो के परमात्मा का विचार करता है उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते है।

जब व्यक्ति अपने जीवन अर्थात् व्यवहार में यम, नियमों पर आचरण आरम्भ करता है, जब दोनों समय ईश्वर का धन्यवाद देना आरम्भ करता है ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) आरम्भ कर देता है। ब्रह्म यज्ञ के मुख्य दो भाग हैं एक तो प्रात: सायं ध्यान लगाकर अपने दैनिक व्यवहार पर चिन्तन कर निरन्तर अपनी बुराइयों को दूर करते रहना दूसरा सन्ध्या के मन्त्रों का पाठ जाप विधि से करना (जप की विधि भी आज विधान पूर्वक नहीं रही। एक दिन एक व्यक्ति मेरे पास आया और कहने लगा मैंने एक लाख बार गायत्री मन्त्रों का जाप कर लिया है। मैंने उससे प्रश्न किया क्या अर्थ सहित जाप किया है उसने उत्तर दिया नहीं। मैंने उनको बताया भाई यह जप की विधि नहीं है और कहा जप की विधि यह है सांस भरकर ओ३म् बोलकर मन को ईश्वर में लगाये और साथ-साथ गायत्री मन्त्र या अन्य किसी मन्त्र के द्वारा भी एक-एक शब्द के अर्थ का चिन्तन करें। यही जप वैदिक विधि है।

यह प्रभु मिलन की विधि है निरन्तर अभ्यास से हमारा ज्ञान बढ़ता जाता है। गायत्री मन्त्र में अन्तिम शब्दों में हम परमात्मा से बुद्धि की सन्मार्ग पर चलाने की प्रार्थना करते हैं। आज इतने चिन्तन विहिन हो गये हैं यदि कोई व्यक्ति, दीपावली या अन्य किसी अवसर पर हमारे यहां मिठाई भेज देता है। तो हम उसक धन्यवाद देते है जिस ईश्वर ने हमें कितना सुन्दर शरीर एक से एक उत्तम पदार्थ खाने के दिये है उसका हम धन्यवाद नहीं देना चाहते जबकि उपरोक्त प्रकार से स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने पर हमें सबसे बड़ा लाभ यह होगा बड़े से बड़ा कष्ट आने पर दु:ख सहन की क्षमता प्राप्त होगी, बड़े से बड़े दु:ख भी हम हंसते-हंसते सहन कर लेगें। इसी विषय में किसी कवि ने ठीक ही लिखा है।

वही दु:ख उठाये जो प्रभु को भुलाये।
समय कीमती को भजन बिना बिताये।।

– आदित्य प्रकाश गुप्त, प्रधान आर्य समाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

समाचार दर्पण

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस आयोजित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा, दिल्ली एवं आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 21 जून, 2015, रविवार को प्रात: 9 बजे आर्य समाज के सभागार में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम ब्रिगेडियर ए.के.अदलखा सहपत्नी, श्री एस.के.शर्मा, डायरेक्टर, डी.ए.वी. पब्लिकेशन, विद्यालयों की प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या एवं शिक्षिकाओं के सानिध्य में डॉ. प्रमोद विद्यार्थी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से हवन सम्पन्न करवाया तत्पश्चात् डॉ. एस.के.शर्मा, संगीतज्ञ ने अति सुन्दर भजनों की प्रस्तुति की। दयानन्द महाविद्यालय, हिसार के प्राचार्य, डॉ प्रमोद विद्यार्थी ने ध्यान की प्रकिया से अवगत करवाया। इसके पश्चात् ब्रिगेडियर चितरंजन सांवत (वीएसएम) जिनको इस समारोह में मुख्य-वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था उन्होंने अपने उद्बोधन में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में दिये गये भाषण का संदर्भ देते हुए बताया कि

आज मानव-मात्र योग-साधना में या लीन है या लीन होना चाहता है। उन्होंने महर्षि पतंजलि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अष्टांग योग पर चर्चा की। योग के प्रचार-प्रसार में उनके योगदान की चर्चा की। अष्टांग योग के आठों सोपानों पर चर्चा करने के बाद चीन जैसे देश में योग विश्वविद्यालय की स्थापना का समाचार देते हुए ब्रिगेडियर सांवत ने कहा, योग मानव-मात्र के लिए है, किसी विशेष धर्म या समुदाय से सम्बन्धित नहीं। इसके पश्चात् डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, ईस्ट ऑफ लोनी, दिल्ली के धर्माचार्य डॉ. कमल किशोर ने लगभग आधा घंटा तक शिक्षकों और कार्यालय में व्यस्त रहने वाले लोगों को विशेष लाभ देने वाले आसन करवाएं। आर्य समाज के पूर्ण रूप से भरे सभागार में उपस्थित आर्यजनों ने इस आयोजन में सौल्लास भागीदारी की और संकल्प लिया कि योग को अपने जीवन का अंग बनाकर स्वास्थ्य लाभ करने और परमात्मा से जुड़ने की इस प्रक्रिया का अनुसरण करेंगे ।

ब्रिगेडियर ए.के.अदलखा, मंत्री, आर्य समाज (अनारकली) ने सारे आयोजन का संचलान किया। इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के अनेकों पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। अंत में श्री एस.के.शर्मा, मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने मौसम खराब होने के बावजूद इतनी भारी संख्या में पधारने के लिए सब का धन्यवाद प्रकट किया। शांति पाठ के बाद जलपान का वित्तरण किया गया।

11वां आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

आर्य परिवारों के बीच वैवाहिक रिश्तो की डोर जोड़ने की सार्थक पहल के तहत 11वें आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज विवेक विहार नई दिल्ली पर किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री अरूण वर्मा ने कहा कि आर्य समाज दहेज और जातिवाद दोनों का सख्त विरोधी है। आर्य परिवारों का वैवाहिक परिचय सम्मेलन इनके विरोध में एक क्रांतिकारी कदम है। सम्मेलन में उपस्थित युवक-युवतियों ने मंच पर आकर आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय दिया और शैक्षिक एवं आर्थिक, योग्यता का गरिमापूर्ण ढंग से उल्लेख किया। इस ग्यारहवें परिचय सम्मेलन में भाग लेने के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों से युवक-युवतियां और उनके अभिभावक पधारें। कार्यक्रम में तत्काल पंजीयन की भी व्यवस्था थी। कार्यक्रम की स्थानिय संयोजिका श्रीमती उषा किरण आर्या ने बताया कि सम्मेलन में एक दूसरे से मेल मिलाप कराने के लिए एक मेल मिलाप समिति का गठन किया गया था। इसके माध्यम से कई पक्षों की आपस में बातचीत कराई गई व संबंधों को आगे बढ़ाने में मदद की गई।

उपरोक्त कार्यक्रम के सफल आयोजन में राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा जी का उल्लेखनीय योगदान रहा। आदरणीय चड्ढा जी ही इस प्रकार के आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलनों के जनक है, उन्हीं के सुझाव द्वारा प्रथम बार इस प्रकार का आयोजन दिल्ली में आयोजित किया गया था, उसके बाद निरन्तर यह श्रृंखला चल रही है। हम श्री अर्जुनदेव जी की स्वस्थ दीर्घ आयु की कामना परमात्मा से करे हैं ताकि वह इसी प्रकार स्वामी दयानन्द के सच्चे सिपाही के रूप में निरन्तर सेवा कार्य करते रहे।

डॉ. महेश विद्यालंकार सम्मानित

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी को उनकी आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा सेवा पूर्वक तथा महर्षि दयानन्द की मान्यताओं के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए योगदान को स्मरण करते हुए 'अग्निहोत्री धमार्थ ट्रस्ट' ने स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के 'प्रेरणा दिवस' समारोह में 15 मई 2015 को 'आर्ष कन्या गुरुकुल' चोटी पुरा में स्मृति चिह्न एवं 11000/- रूपए की राशि सहित 'वेद रत्न पुरस्कार' से सम्मानित किया। आदरणीय डॉ. महेश विद्यालंकार जी द्वारा उपरोक्त राशि 'गुरुकुल चोटीपुरा को विनम्रतापूर्वक भेंट करने पर मंच पर उपस्थित विद्वत्गण तथा समारोह में उपस्थित आर्यजन समूह ने उल्लासपूर्वक करतल ध्वनि से उनकी उदारता का स्वागत किया। डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने समारोह में उपस्थित विद्वान आगन्तुक महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त किया और ट्रस्ट के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के प्रेरणा दिवस पर उनके प्रेरक जीवनवृत्त पर प्रकाश डाला और स्वामी जी के जीवन दर्शन से सबको प्रेरणा लेने का आग्रह किया। 'आर्ष गुरुकुल चोटीपुरा' की आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने डॉ. महेश जी के जीवन एवं आर्य समाज के क्षेत्र में उनके योगदान की चर्चा करते हुए उनका धन्यवाद किया तथा विद्वत् मण्डल और आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद की अध्यक्षता बनी डॉ. (श्रीमती) विमल महता

पिछले कई वर्षो से आर्य केन्द्रीय सभा नगर निगम क्षेत्र के अध्यक्षा पद पर सुशोभित डॉ. (श्रीमती) विमल महता इस वर्ष भी समिति की बैठक में सर्वसम्मति से अध्यक्षा पद के लिए चुनी गई। बैठक में उनका नाम निर्विरोध रूप से घोषित किया गया जिसे सबने करतल ध्वनि से स्वीकार किया। अध्यक्षा के इस पद को अने सहायक स्वयं चुनने का अधिकार प्राप्त है जिससे कार्य सुचारू रूप से हो सके। डॉ. (श्रीमती) विमल महता इस दायित्व को पूरी आस्था और निष्ठा से निभाने में सफल रही हैं। वह एक प्रसिद्ध समाजसेवी एवं महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान की अध्यक्षा भी हैं।

वर चाहिए

वैदिक आर्य परिवार की सुन्दर, सुशील एवं सुसंस्कारित पुत्री, आयु 40 वर्ष, कन्या गुरुकुल की स्नातिका (जो पहले विवाहित थी और अब अपनी 15 वर्षीय कन्या के साथ वियुक्ता अर्थात् तलाकशुदा है) के लिए 40 से 45 वर्षीय अविवाहित, विधुर अथवा वियुक्त अर्थात् तलाकशुदा वर चाहिए, जो आर्य समाज एवं वैदिक धर्म का अनुयायी हो और माँ-बेटी दोनों को ससम्मान स्वीकार करना चाहता हो। सम्पर्क- मो. 08605395038, फोन-0044-7419110552, Email:acharyasonera0@gmail.com

आर्यजनों ने दी श्रद्धांजलि

स्वामी ओमानन्द सरस्वती आर्ष वैदिक संस्थान नरेला-दिल्ली द्वारा संचालित स्वामी ओमानन्द सरस्वती आर्ष गुरुकुल विद्यावन, रानीकोट (हासमपुरा) उज्जैन के कार्यकारी प्रधान मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के पूर्व मन्त्री व अंतरंग सदस्य श्री करणसिंह पटेल (बाबूजी) निवासी चिकली का हृदयाघात से असामयिक निधन उज्जैन में हो गया था। इनका अंतिम संस्कार वैदोक्त रीति से उनके गृहगाँव में कराया गया। हम भी टंकारा ट्रस्ट परिवार की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

डी.ए.वी. का स्थापना दिवस सम्पन्न

दिनांक 1 जून को एस.एम.एम. न्यू डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में डी.ए.वी. का स्थापना दिवस आयोजित किया गया। शुरुआत हवन से करवाई गई। जिसमें सारे बच्चों और अध्यापकों ने एक साथ मिलकर वेद-मन्त्रों उच्चारण किया। हवन के बाद प्रोग्राम की शुरुआत की गई जिसमें चेयरमैन मैडम श्रीमती वेदपुरी जी ने महात्मा हंसराज के जीवन के बारे में बताया कि उन्होंने 1 जून 1881 ई. में पहले डी.ए.वी. हाई स्कूल की स्थापना लाहौर में की थी जिसमें उन्होंने सारा जीवन बिना वेतन के प्रधानाचार्य का काम किया। उन्होंने स्कूल को महाविद्यालय तक पहुँचा दिया। उनका यह स्कूल खोलने का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों द्वारा दी जा रही शिक्षा का मुँह तोड़ जवाब देना था और देश भक्त पैदा करना था ताकि भारतीय नौजवान अपनी संस्कृति को भूल न पाएं और भारत को आजाद करवाना उनका उद्देश्य हो। इस महत्वपूर्ण जानकारी को बच्चों ने पूरे ध्यान से सुना। इसके बाद कुछ बच्चों ने कविताएं बोली और कुछ बच्चों ने रंगारंग प्रोग्राम पेश किया जो कि शिंदरपाल मैडम ने तैयार करवाया था जिसमें डांडिया डांस प्रमुख था। चेयरमैन मैडम श्रीमती वेदपुरी जी ने बच्चों को जिन्दगी में आगे बढ़ने और देश की सेवा बिना स्वार्थ के करने की प्रेरणा दी। अंत में बच्चों को ईनाम बांटे गए। प्रिंसीपल मैडम श्रीमती वीनापुरी जी ने बच्चों का और आए हुए माता-पिता का धन्यवाद किया। स्टेज सैक्रेटरी की भूमिका मैडम परमिन्दर कौर ने निभाई और उन्होंने भी डी.ए.वी. स्थापना दिवस की पूरी जानकारी दी। इस प्रोग्राम में स्कूल का स्टाफ मैडम परमिन्दर कौर, शिंदरपाल कौर, शीला रानी, हेमलता, रमनदीप, गुरप्रीत कौर, दविन्द्र पाल कौर, नथिया रानी और मीनाक्षी हाजिर थे।

चुनाव समाचार

आर्य समाज पटेल नगर, नई दिल्ली

प्रधान- श्री जितेन्द्र आर्य **मन्त्री**- श्री राजीव कान्त कु.

कोषाध्यक्ष- श्रीमती सुषमा आहूजा

आर्य समाज बड़ा बाजार, सोनीपत, हरियाणा

प्रधान- श्री सुभाष चांदना **मन्त्री**- श्री प्रवीण आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री दीपक तलवार

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत, सेक्टर-14, सोनीपत, हरियाणा

प्रधान- श्री अशोक गोयल **मन्त्री**- श्री सुदर्शन आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री अशोक आर्य

आर्य केन्द्रीय सभा, नगर निगम क्षेत्र, फरीदाबाद

अध्यक्षा- डॉ. विमला मेहता

आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा

प्रधान- श्री श्रीचंद गुप्ता **मन्त्री**- श्री रघुराज सिंह कर्णावत

कोषाध्यक्ष- श्री शिवदयाल गुप्ता

101 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता की अध्यक्षता में अपनाघर शालीमार, अलवर में आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं त्रेहान होम डेवलपर्स के सामूहिक प्रयास से महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों, वेद प्रचार, पर्यावरण शुद्धि, विश्व शांति एवं सुख समृद्धि हेतु तथा सफाई अभियान को समर्पित 101 कुण्डीय महायज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. हरिप्रसाद व्याकरचार्या नई दिल्ली, यज्ञ के अधिष्ठाता अमरमुनि जी पूर्व मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आर्य शिरोमणि पं. विनोदीलाल दीक्षित वैदिक विद्वान एवं समाजसेवी व पं. शिवकुमार कौशिक रहे। प्रदीप आर्य, मन्त्री, आर्य कन्या विद्यालय समिति ने संबोधन कर आगन्तुक अतिथियों, यजमानों तथा उपस्थित धर्मप्रेमी बंधुओं का स्वागत किया। आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित संस्थाओं का संक्षित परिचय देते हुए बालिकाओं को वैदिक संस्कारों के अनुसार शिक्षित करना बताया।

अध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 6 से लेकर शास्त्री तक के छात्रों को अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी व गणित पढ़ाने के लिए एवं बच्चों की देखरेख करने हेतु संरक्षक की आवश्यकता है। वेतन के साथ-साथ भोजन, वस्त्र, दूध आदि की सुविधा दी जाती है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करे। **आचार्य सुधांशु, मो. 9350538952**

चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

आर्यसमाज अकोला में 'व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण' का आवासीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 80 बच्चों ने भाग लिया। इस शिविर में प्रमुख मार्गदर्शक, उद्‌बोधक तथा प्रशिक्षक स्वामी ब्रह्मानन्दजी सरस्वती, आचार्य आर्ष गुरुकुल, वडलूर, कामारेड्डी तेलंगाना, दार्शनिक विद्वान व आर्यवीर ब्रह्मचारी अरूणकुमार जी मुम्बई, व्यायामाचार्य श्री शैलकुमारजी बिलासपुर तथा निसर्गोपचार तज्ञ डॉ. धनलालजी शेन्द्रे जी थे। इस शिविर में बच्चों से आदर्श दिनचर्या का पालन कराया गया। प्रातः काल जागरण के मन्त्र, यज्ञ व संध्या के मन्त्र, शयन मन्त्र बच्चों ने याद किये। संध्या व यज्ञ करना भी सीखा। उन्होंने उपासना, साधना तथा ध्यान की विधि भी सीखी। आर्यवीर ब्रह्मचारी अरूणकुमारजी तथा व्यायामाचार्य श्री शैलकुमारजी ने बच्चों को व्यायाम, प्राणायाम, आसन, सूर्यनमस्कार, मार्शल आर्ट, लाठी चलाना, पिरामिड बनाना तथा विभिन्न खेलकूदों का प्रशिक्षण दिया।

आर्य अभिनन्दन

आर्य समाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक, जिनकी आयु 60 वर्ष अथवा उससे ज्यादा हो गयी है, हम उन सबका इसी वर्ष में अभिनन्दन करेंगे। आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र, अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जायेगी। पत्र व सूचना देने का पता- ठाकुर विक्रम सिंह, ए-41, द्वितीय तल, लाजपत नगर-2, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110024

गर्मी में फायदेमन्द है तरबूज

गर्मी शुरु होते ही में बाजारों में तरबूज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने लगते हैं। ये गर्मी से राहत दिलाने में बहुत ही उपयोगी है इसका सेवन करने से अनेक फायदे है:

❑ जिन व्यक्तियों को कब्ज की शिकायत रहती है, उनके लिए तरबूज का सेवन अच्छा रहता है, क्योंकि इसके खाने से आँतों को एक प्रकार की चिकनाई मिलती है। ❑ इसका सेवन उक्त रक्तचाप को बढ़ने से रोकता है। ❑ खाना खाने के उपरान्त तरबूज का रस पीने से भोजन शीघ्र पच जाता है। इससे नींद भी अच्छी आती है। इसके रस से लू लगने का अंदेशा भी नहीं रहता। ❑ मोटापा कम करने वालों के लिए यह उत्तम आहार है। ❑ पोलियो रोगियों को तरबूज का सेवन करना बहुत लाभकारी रहता है, क्योंकि यह खून को बढ़ाता है और उसे साफ भी करता है। त्वचा रोगों में भी यह फायदेमंद है। ❑ तपती गर्मी में जब सिरदर्द होने लगे तो तरबूज के आधा ग्लास रस को मिश्री में मिलाकर पीना चाहिए। पेशाब में जलन हो तो ओस या बर्फ में रखे हुए तरबूज का रस निकालकर सुबह शकर मिलाकर पीने से लाभ होता है। ❑ गर्मी में नित्य तरबूज का ठंडा-ठंडा शरबत पीने से शरीर को शीतलता तो मिलती ही है, चेहरे पर गुलाबी-गुलाबी आभा भी दमकने लगती है। इसके लाल गूदेदार छिल्कों को हाथ-पैर, गर्दन व चेहरे पर रगड़ने से सौन्दर्य निखरता है। ❑ सूखी खाँसी में तरबूज खाने से खाँसी का बार-बार आना बंद हो जाता है। तरबूज की फाँकों पर कालीमिर्च पाउडर, सेंधा व काला नमक बुरक कर खाने से खट्टी डकारे आना बंद हो जाती है। ❑ धूप में चलने से बुखार आये तो फ्रिज का ठंडा-ठंडा तरबूज खाने से फायदा होता है। ❑ चेहरे पर काले धब्बे होने पर तरबूज का गुदा लें और इस चेहरे पर आहिस्ता-आहिस्ता रगड़ें 10 मिनट के उपरान्त चेहरे को गुनगुने पानी से साफ कर लें। ❑ एक बड़े तरबूज में थोड़ा-सा छेद करके 200 ग्राम चीनी भर दें। 4-5 दिन तक उसे दिन में धूप में तथा रात में चन्द्रमा की रोशनी में रखें इसके बाद अन्दर से पानी निचोड़ लें और छान कर काँच की साफ बोतल में भर लें यह तरल पदार्थ चौथाई कम की मात्रा दिन में दो से तीन मर्तबा पीने से अनपच, भूख बढ़ाने तथा खून की कमी में अत्यन्त लाभकारी होता है। ❑ पागलपन, दिमागी कमी, हिस्टीरिया, अनिद्रा रोगों में तरबूज का गुदा 40 मिनट के लिए सिर पर रखना फायदेमन्द होता है। ❑ तरबूज में विटामिन ए.बी.सी. तथा लौह भी प्रचुर मात्रा में मिलता है, जिससे रक्त सुर्ख व शुद्ध होता है। तरबूज में लाइकोपिन पाया जाता है। लाइकोपिन हमारी त्वचा को जवान बनाए रखता है। ये हमारे शरीर में कैंसर को होने से भी रोकता है। ❑ तरबूज दिल की बीमारियों को होने से रोकता है। ❑ जिन लोगों को डिप्रेशन या जो लोग काम के तनाव में अधिक रहते हैं उनके लिए तरबूज बहुत फायदेमन्द होता है। ❑ तरबूज खाने से दिमाग शान्त और खुश रहता है। जिन लोगों को गुस्सा अधिक आता है तरबूज खाने से उनको अपना गुस्सा शान्त करने में बहुत मदद मिलती है। ❑ गर्मियों में तरबूज खाने से गर्मियों में होने वाली बहुत सी बीमारियों से बचा जा सकता है। ❑ तरबूज में विटामिन ए और सी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। विटामिन सी हमारे शरीर के प्रतिरक्षा तन्त्र को मजबूत बनाता है और विटामिन ए हमारे आँखों के स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी होता है। - साभार ई नेट

(स. विशेष प्रस्थिति में सेवन से पूर्व चिकित्सक/आयुर्वेदाचार्य से परामर्श अवश्य कर लेवें।)

(पृष्ठ 1 का शेष)

(ऐश्वर्य की कमी नहीं होती मगर उस ऐश्वर्य से ये अन्त: पेय बनाते हैं........गलत खान-पान व क्लब आदि में अपव्यय व अपभक्षण नहीं करते), 32. **(आहुत: प्रयन्ति जिग्यु:)** बिना युद्ध के लिए ललकारे हुए भी ये धावा बोलकर विजय प्राप्त करते है (किसी को धावा बोलने का साहस ही नहीं होता है वा अपनी त्यागवृत्ति के कारण सर्वत्र विजयी होते हैं आदि...... ऐसी त्यावृत्ति वाले कभी किसी शत्रु का शिकार नहीं होते हैं....... (ऋ. 10-107-9), 33. उनके लिए सवारी आदि की समस्त सुविधाएं प्राप्त होती हैं, 34. उसके घर में परिचारिकाओं की कोई कमी नहीं रहती है, 35. उसका घर सब प्रकार की सुविधाओं से तथा साज-सज्जा से सुसज्जित रहता है (ऋ. 10.107.10), 36. दानी का रथ सदा उत्तम घोड़ों से जुता रहता है (वह जीवन में सब प्रकार की उन्नति करता है तथा परलोक की गति भी उत्तम होती है), 37. जीवन में सब प्रकार के शत्रुओं से सदा ही विजय प्राप्त करता है (सब देवगण उसकी सदा रक्षा किया करते है) (ऋ. 10-107-11)।

ऋग्वेद में ही अन्यत्र (ऋ 10.117.1) कहा गया है कि व्यक्ति को सदा ही किसी भूखे को भोजन देकर तृप्त करना चाहिए **(पृणत: रयि: न उपदस्यति)** दान देने वाले का धन नष्ट नहीं होता इसलिए दान देने से धन में कमी आऐगी, ऐसा विचार नहीं करना चाहिए। **(अपृणन् मर्डितारम् न विन्दते)** दान न देने वाला उस प्रभु को प्राप्त नहीं करता है, धनासक्ति न रहने से दानी को प्रभु प्राप्त होते हैं....... अगले मन्त्र (ऋ 10-117-2) में भी यही बात कही गई है कि जो भूखे को रोटी न देकर स्वयं सामने-सामने खाता है, उसे प्रभु प्राप्त नहीं होते। अगले मन्त्रों में कहा गया कि (ऋ. 10-117-3)-जो धन की कामना करने वाले को देता है वह मानों स्वयं को ही धन से समृद्ध करता है, (ऋ. 10.117-4) भूखे को अन्न न देने वाले का अपना घर भी पराया हो जाता है और देने वाले के लिए दूसरे का घर भी अपना हो जाता है, (10-117-5) धन का आना-जाना किसी रथ के पहिए के समान है अत: यह सोचकर भी दान देना चाहिए, (10-117-6)-**केवलाघो भवति केवलादी**-दान न देनेवाला भोगासक्त पुरुष अपना ही विनाश कर बैठता है और उसकी पा-वृत्ति बढ़ती जाती है, (10-117-(7) न देने से दान देना अच्छा है, दान प्रेम को स्थिर करता है, (10-117-8) दान देने के लिए आवश्यक नहीं कि हमारे पास बहुत धन हो बल्कि यह उदार हृदय वाला देता है तथा उससे वह अधिक विशाल हृदय वाला बनता चला जाता है........ यजुर्वेद में कहा गया है कि-**व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धता सत्यमाप्यते।** (यजु. 19-30) (व्रतेन) व्यक्ति व्रत से (दीक्षाम्) दीक्षा को (Self devotion, समर्पणादि) को **(आप्नोति)** प्राप्त होता है **(दीक्षया)** उस दीक्षा के द्वारा **(दक्षिणाम् आप्नोति)** दक्षिणा को प्राप्त होता है अर्थात् दीक्षित व्यक्ति स्वत: ही दान-वृत्ति वाला हो जाता है। उस दक्षिणा देने की वृत्ति से (श्रद्धाम) सत्-सत्य, धा-धारण अर्थात् सत्य के धारण को (आप्नोति) प्राप्त होता है (श्रद्धया) उस श्रद्धा से **(सत्यम् आप्यते)** वह सत्य प्रभु को प्राप्त हो जाता है।

- महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर-174401, हि.प्र.

हे मेरे तुम आर्य समाज

❒ राजेश कुमार सिंह

हे मेरे तुम आर्य समाज, तुमको मेरा कोटि नमन है
बलबुद्धि विद्या पास नहीं है, सब गुण आगर कर देना
अन्तर मन में छिपा जो अवगुण, उससे भी छुटकारा हो
स्नेह प्यार समता ममता, रग-रग मेरे भर देना

हे आर्य समाज तू, वेदों के, हमेशा ही गुण गाते हो,
उसके मधुरिम राग स्वरो कों, मुझको को भी सिखला देना
भारतीय वैदिक ग्रंथों को, अखिल विश्व अपनाने लगा है
उसके ज्योति गणित विज्ञान, मुझको भी बतला देना

चोरी डकैती से, तेरा कोई सम्बन्ध नहीं है
अनाचार व्यभिचारों से, दूर रहने का देना ज्ञान
सदाचार को करना, अपना धर्म समझता है
ऐसा तू बतला करके, कर दे मुझको बड़ा महान

कारण नहीं अकारण होता, तेरे पास मैं आया हूँ
सच कहता हूं खाली झोली, खाली नहीं तुम जाने दो
मन की आशा और जिज्ञासा, तुमसे ही पूरी होगी
खाली हाथ राजेश आये तो, भरकर झोली जाने दो

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अत: समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें एवम् अपनी बालिकाओं को आज के परिपेक्ष में पूर्ण रूप से वीरांगना बनावें। बालिकाओं को स्वरक्षा एवम् वैदिक विदुषी के लिए प्रवेश दिलवायें। बालिकाओं के लिए पौष्टिक भोजन, कम्प्यूटर शिक्षा, सुव्यवस्थित छात्रावास एवम् बिजली जाने पर इन्वटर/जरनेटर की व्यवस्था।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

अलवर, राजस्थान-301401, फोन : 01495-270503, मो. 09416747308

जरूरी नहीं कि इन्सान प्यार की मूरत हो,
सुन्दर और बेहद खूबसूरत हो,
अच्छा तो वही इन्सान होता है,
जो तब आपके साथ हो,
जब आपको उसकी जरूरत हो।

टंकारा समाचार जूलाई, 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-07-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.06.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइलः 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय